HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

श्रावण-भाद्रपद, युगाब्द 5122, जुलाई-अगस्त 2020

मूल्य 20/- प्रति

INDER SINCE 1958

INDER® INDUSTRIES

(A Govt. Recognised Star Export House)

Basti Danishmandan, Shiv Puri Road, Jalandhar-144 002. (Pb.) India.
Tel (O) : +91-181-2201666, 2255777, 5005666
Mob. : +91-98147-32488 (Snl), 98725-19215 (Vj)
E-mail : inder@inderindia.com, Website : www.inderindia.com

GRIP EXPORTS

28, Industrial Area, Mehatpur-174315.,
Distt. Una (H.P.) INDIA.

INDIA'S No. 1 PLUMBING TOOLS

AN ISO-9001: 2015Co.

CONFERMITY WITH EUROPEAN STANDARD

मातृवन्दना संस्थान का प्रकाशन

मातृवन्दना

वर्ष: 20 अंक : 07-08 | श्रावण-भाद्रपद कलियुगाब्द 5122, जुलाई-अगस्त 2020

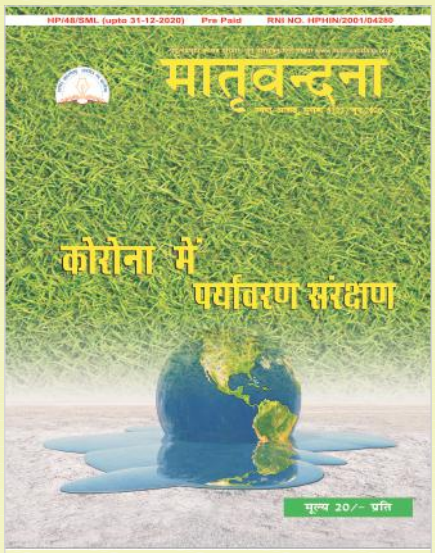

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

मीनाक्षी सूद
डॉ. अर्चना गुलेरिया
डॉ. उमेश मौदगिल
डॉ. जय कर्ण

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र., दूरभाष : 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक : कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेज-9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित। **संपादक : डॉ. दयानंद शर्मा**

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय	आत्मनिर्भर भारत से चीन	5
चिन्तन	गांवों के स्वावलंबन से	6
प्रेरक प्रसंग	स्वार्थ अभिशाप और	7
आवरण	तिलमिलाए चीन और पाकिस्तान	8
संस्कृति	भाई-बहन के रिश्तों की अटूट डोर	12
देश प्रदेश	कोरोना योद्धा सम्मान और	13
देवभूमि	शक्तिपीठों के विवादों से	15
पुण्य स्मरण	कर्तव्यपरायण और निष्ठावान	17
विशेष	चीन की दीवार चीनी	18
कृषि जगत	सफलता की ओर शेर सिंह	19
विश्व दर्शन	शताब्दियों तक तिब्बत का गुलाम रहा	20
काव्य जगत	राम मंदिर का रामायण	21
महिला जगत	स्त्रियों को वेद	22
स्वास्थ्य जगत	चिकित्सा विज्ञान में आत्मनिर्भर	23
घूमती कलम	हरित घर वर्तमान की आश्यकता	26
समसामयिकी	अपने पावों पर खड़ा	27
विविध	कला साधना मानवोपयोगी	28
प्रतिक्रिया	गिद्ध पत्रकारिता	30
दृष्टि	गांव लौटे युवा	31
बाल जगत	बालों की कहानी	33

पाठकीय...

सम्पादक महोदय,

कभी किसी ने बैठकर सोचा नहीं होगा, क्योंकि हम अपने जीवन में इतने व्यस्त हैं, कि हमारे पास इस मानव जीवन के अंतिम सत्य के बारे में सोचने का समय ही नहीं है, हमारे पास केवल अपनी तृष्णाओं की पूर्ति का समय है, हमें केवल धन एकत्रित करना है, हमें केवल भोग भोगने हैं, हमें केवल अपना सत्य स्थापित करना है, हमें केवल दूसरों को नीचा दिखाना है, पर कभी किसी ने सोचा, यह सब भोग क्षण भर के हैं, हमारे से पहले इस पृथ्वी पर कितने राजा, महाराजा आए, जो कितने शक्तिशाली थे, उन्होंने अपनी भक्ति से देवो को प्रसन्न करके कई वरदान हासिल किए पर वो भी एक दिन काल के ग्रास बन गए, तो क्यों आज इस पृथ्वी का तुच्छ सा मानव यह भूल गया है, उसे भी एक दिन काल का ग्रास बनना है, अगर भूल गए हैं, तो एक दिन शमशान भूमि में जाकर किसी जलते मुर्दे को देख आए, क्योंकि यही जीवन का अंतिम सत्य है।◆◆◆**अमित डोगरा, शोधकर्ता, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर**

महोदय,

चीन के मामले में सम्हाल कर बोले मोदी। मनमोहन सिंह की मोदी को कठोर सलाह। इस संदर्भ में मैं कहना चाहता हूं कि जिन ईमानदार अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री ने अपने शासन में 52 लाख करोड़ के घोटाले करवाए और दुनिया का सबसे बड़ा बैंक लोन एनपीए घोटाला अंजाम दिया, साथ ही कॉमनवेल्थ, कोयला, 2G, एंट्रिक्स देवास, अगस्ता वेस्टलैंड, नेवी टैंकर, टाट्रा ट्रक, आदर्श हाउसिंग, जीजाजी जमीन जैसे अनगिनत घोटालों की बाढ लगा दीर्घजिस महान अर्थशास्त्री के शासन में महंगाई दर 15 प्रतिशत छू गई थी और देश को 5 सबसे कमजोर अर्थव्यवस्थाओं वाले फ्रेजाईल 5 के समूह में रख दिया गया था।

जिसने देश की 640 वर्ग मील भूमि चीन को दे दी, जिन्होंने शर्म-अल-शेख में बलूचिस्तान पर बेढब बयान देकर देश की नाक कटवाई, जिन्हें पाकिस्तानी प्रधानमंत्री देहाती औरत कहा करता था, जो 26/11 पर तकिया में मुंह दबाए बैठा रहा और वायुसेना को बदला तक नहीं लेने दिया, जिसके राज में देश भर में हजारों आतंकवादी हमले हुए और कई हजार निर्दोष मारे गए। सीमा पर भारतीय जवानों के सिर काट कर ले जाने वाले पाकिस्तानियों पर मुंह नहीं खोला परंतु उस घटना का बदला लेने वाले कर्नल पठानिया और उसकी टीम का कोर्ट मार्शल करवा दिया, जो चीन के डर से अरुणाचल नहीं जाता था, जिसने चीन के डर से दौलत बेग ओल्डी की एयर स्ट्रिप चालू करने की अनुमति नहीं दी, जिस ने चीन के डर से चीनी सीमाओं के निकट आवश्यक सुरंगे, सड़कें और ब्रिज तक नहीं बनवाए, जिसने भारतीय वायु सेना के बार बार आग्रह पर वायु सेना को एक नया कॉम्बैट जेट तक नहीं दिलवाया, जिसने भारतीय नेवी को पनडुब्बियों की बैटरी तक नहीं दिलवाई जिनके कारण पनडुब्बियों में धमाके हुए और 24 नौसैनिक तक मारे गए, जिसने भारत के सैनिकों को अनेकों बार निवेदन करने पर भी बुलेटप्रूफ जैकेट, बैलिस्टिक हेलमेट, नाइट विजन डिवाइस, नई स्नाइपर राइफल और एक अच्छी गुणवत्ता वाली असाल्ट राइफल तक नहीं दिलवाई, जिसने आतंकवादियों की जासूसी कर रहे कर्नल पुरोहित को फर्जी केस में फंसाकर सालों साल टॉर्चर व् प्रताड़ित करवाया और उनके पैर में 17 फ्रैक्चर दिए, आज वो महान व्यक्ति देशहित के उपदेश देता फिर रहा है।◆◆◆

जुलाई-अगस्त माह के शुभ मुहूर्त

तिथि	दिन	व्रत/त्योहार
05/7/2020	रविवार	गुरु-पूर्णिमा, आषाढ़ पूर्णिमा
06/07/2020	सोमवार	सावन प्रारम्भ, श्रावण सोमवार
08/07/2020	बुधवार	संकष्टी चतुर्थी
06/07/2020	गुरुवार	कामिका एकादशी
03/07/2020	गुरुवार	हरियाली तीज
05/07/2020	शनिवार	नाग पंचमी
0/07/2020	गुरुवार	श्रावण पुत्रदा एकादशी
03 /08/2020	सोमवार	रक्षा बंधन, श्रावण पूर्णिमा व्रत
06/08/2020	गुरुवार	कजरी तीज
07/08/2020	शुक्रवार	संकष्टी चतुर्थी
12/08/2020	बुधवार	जन्माष्टमी
15/08/2020	शनिवार	अजा एकादशी
16 /08/2020	रविवार	प्रदोष व्रत, सिंह संक्रांति
17 /08/2020	सोमवार	मासिक शिवरात्रि
19 /08/2020	बुधवार	भाद्रपद अमावस्या
21 /08/2020	शुक्रवार	हरतालिका तीज
22/08/2020	शनिवार	गणेश चतुर्थी

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 7650000990

ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्री गुरू पूर्णिमा, कारगिल विजय दिवस, रक्षा बंधन, श्री कृष्ण जन्माष्टमी और स्वतन्त्रता दिवस हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (जुलाई/अगस्त 2020)

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस	01 जुलाई
व्यास पूर्णिमा(श्री गुरू पूर्णिमा)	05 जुलाई
विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
कारगिल विजय दिवस	26 जुलाई
इद-उल-अजहा	01 अगस्त
रक्षा बन्धन	03 अगस्त
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	12 अगस्त
स्वतन्त्रता दिवस	15 अगस्त
राष्ट्रीय खेल दिवस	29 अगस्त
मुहर्रम	30 अगस्त
ओणम	31 अगस्त

आत्मनिर्भर भारत से चीन को सबक

अनादि काल से भारतीयों का राष्ट्र जीवन अपनी संस्कृति के अनुसार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की नीति पर सातत्य रूप से चलता आ रहा है। इतिहास साक्षी है कि भारत ने कभी भी किसी दूसरे देश को हस्तगत करने के लिए उस पर आक्रमण नहीं किया है। अपनी संप्रभुता बनाए रखने के लिए ही उसे अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान के विरूद्ध कई बार हथियार उठाने के लिए बाध्य होना पड़ा। दूसरी ओर विश्व की महानतम शक्ति बनने के सपने संजोने वाला अत्यन्त एवं विस्तारवादी नीति अपनाने वाला पड़ोसी देश चीन भारतीय सीमा पर नित नये विवाद उत्पन्न कर रहा है। ईसापूर्व चीन का इतिहास संस्कृति संवर्धन से जुड़ा था। ई.पू. छठी-सातवीं शताब्दी में लाओत्से, कन्फ्यूशियस् और पश्चात् मैनसियस् जैसे तत्वज्ञों ने विश्व-दर्शन को प्रभावित किया। पश्चात् फाह्यान और ह्वेनसांग ने भारतीय बौद्ध दर्शन का अध्ययन किया और उसे श्रेष्ठ मानकर चीन में बौद्ध मत का प्रचार-प्रसार किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद माओ-त्से-तुंग की साम्यवादी विचारधारा से चीन का परिदृश्य बदलने लगा। माओ ने भी स्टालिन के पद्चिन्हों पर चलते हुए अपने ही देशवासियों की निर्मम हत्याएं की। चीन में पड़े भीषण अकाल के दौरान, भुखमरी, बीमारियों आदि से कीड़ों की तरह नष्ट होने वाले लाखों लोगों के अतिरिक्त अमानवीय क्रूरता का शिकार बनने वाले लोगों की संख्या 90 लाख की जबकि चीन के मामले में नजर रखने वाले आर.जे. रमेल इस संख्या को लगभग तीन करोड़ 87 लाख दो हजार बताते हैं। सन् 1989 में चीनी सेना ने तिआन-मन चौक पर लोकतन्त्र की मांग कर रहे दस हजार छात्रों की रैली को क्रूरता-पूर्वक कुचल डाला था। चीन की विस्तारवादी नीति ने तिब्बत को हड़प लिया। ताइवान पर उसकी नजर है। 1962 के युद्ध में भारत से अक्साई चीन सहित पर्याप्त भू-भाग छीन लिया गया है। अरूणाचल के सीमान्त क्षेत्र को वह अपना भू-भाग मानता है। हांगकांग की स्वायत्तता की मांग उसे हजम नहीं हो रही है। जिस महामारी से सम्पूर्ण विश्व आज त्रस्त है, उसका उद्गम स्थल चीन का वुहान शहर है।

चीन के अहं एवं दुराग्रह ने न केवल भारत को अपितु विश्व के अधिकांश देशों को रूष्ट कर अपने विरोध में खड़ा कर दिया है। भारत के साथ ताजा तरीन घटना गलवान घाटी की है जिसमें हमारे जांबाज सैनिकों ने चीनी सैनिकों को पीछे धकेलते हुए द्वन्द युद्ध में हमारे 20 सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए जबकि चीन के 43 सैनिकों को हमारे सैनिकों ने मृत्यु के घाट उतार दिया। स्वतन्त्र होने के पश्चात् भारत ने पंचशील का सिद्धान्त अपनाया। वैश्विक स्थिति का सही आंकलन न करते हुए तत्कालीन कांग्रेस सरकार के मुखिया एवं भारत के प्रधानमंत्री स्व. जवाहर लाल नेहरू ने देश की सीमाओं की सुरक्षा हेतु विशेष ध्यान नहीं दिया। हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा लगाने वाले विश्वासघाती सन् 1962 के युद्ध में परास्त होना पड़ा। सीमाओं की सुरक्षा की शिथिलता कई दशकों तक बनी रही। वर्तमान केन्द्र सरकार ने चीन की सीमा से सटे सभी क्षेत्रों में जब पक्की सड़कों, पुल, एयर बेस आदि बनाने में मुस्तैदी दिखाई तो चीन तिलमिला उठा। अपनी आर्थिक एवं सैन्य शक्ति के बल पर वह भारत को दबाना चाहता है। किन्तु अब भारत भी कमजोर नहीं वह उसका मुकाबला करने के लिए पूरी तरह तैयार है। भारत अब परमाणु शक्ति सम्पन्न देश है। इसकी तीनों जल, थल, वायुसेनाएं अत्याधिक आयुध टैंक प्रक्षेपास्त्रादि युद्धपोत तथा लड़ाकू विमानों में सुसज्जित है तथा बड़ी से बड़ी सैन्य शक्ति को परास्त करने में सक्षम हैं। विश्व की शक्तिशाली सेनाओं में इसकी गिनती की जाती है। वर्तमान में देश की बागडोर ऐसी शख्सियत के हाथ में है जो किसी के सामने झुकने वाली नहीं है। सभी विकसित एवं शक्तिशाली देश इनके व्यक्तित्व से प्रभावित हैं, तथा इनसे मैत्री-भाव रखना चाहते हैं।

प्रधानमंत्री ने लद्दाख में सीमा के सैनिक पहुंच कर भारतीय सेना के जांबाजों को प्रोत्साहित करते हुए चीन को कड़ा सन्देश दे दिया है कि यदि वह गलवान घाटी तथा अन्य सीमा क्षेत्र से विगत सन्धि की शर्तों के अनुसार अपनी सेना को पीछे हटने का आदेश नहीं देता है तो भारतीय सेना भी बड़ी मुस्तैदी से अपनी सीमा की सुरक्षा हेतु मुकाबला करने के लिए सीमा पर तत्पर रहेगी। भारतीय जनमानस चीन के प्रति आक्रामक रूख अपना चुका है। चीनी सामान का बहिष्कार किया जा रहा है। प्रतिरोध स्वरूप चीनी वस्तुओं को जलाया जा रहा है। भारत सरकार ने चीन के 59 एप बन्द कर उसे कड़ा झटका दिया है। चीनी कम्पनियों को भारत में विकास कार्यों की निविदाएं निरस्त हो रही हैं। चीनी उत्पादों के सबसे बड़े बाजार भारत का द्वार बन्द हो जाने से चीन भविष्य में होने वाली आर्थिक हानि की भरपाई कैसे कर पाएगा? यह समझना उसके लिए जरूरी है। भारत शान्ति चाहता है तथा पड़ोसी देशों से मैत्री एवं सद्भाव का इच्छुक है। चीन भी यह जानता है, साथ उसे यह भी मालूम हो चुका है कि विश्व के अधिकांश देश उसके पक्ष में नहीं। अत:एव उसे समझदारी से ही उचित निर्णय लेने चाहिए। केन्द्र सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के अभिवर्धन के लिए व्यवसाय के सभी क्षेत्रों में राशि के वितरण के लिए पहल की है। देश में जहां कोविड19 से पहले पीपीई किट के मामले में कोई उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं थी जो कि अब विश्व के सबसे बडे दूसरे देश के रूप में भारत पहुंच गया है। प्रतिदिन पांच लाख से अधिक पीपीई प्रतिदिन निर्मित हो रही हैं। स्वेदशी का भाव प्रबल हो रहा है। लोकल फोर वोकल अधिक मुखर हो रहा है। देश की सामरिक शक्ति में बढोत्तरी हो रही है, अब सेना के पास फ्रांस से पांच राफेल विमान भी पहुंच चुके हैं। भारत ही एशिया में ऐसा पहला देश है जिसके पास यह युद्धक विमान हैं। 500 वर्षों के संघर्षों के पश्चात् रामजन्म भूमि पर बहुप्रतीक्षित राममंदिर का शिलन्यास होने जा रहा है। त्यौहारी मौसम में सभी सुधी पाठकों को स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

गांवों के स्वावलंबन से हासिल होगी 'आत्मनिर्भरता'

... सुरेंद्र कुमार

आत्मनिर्भरता वह अनुभूति है जिसके एहसास से हमारे गांव समृद्धि की राह पर अग्रसर हो सकते हैं। आत्मनिर्भरता वह धारणा है जिसकी व्याख्या से हमारा समाज प्रदेश भर में उच्च दर्जा हासिल कर सकता है। आत्मनिर्भरता वह विचार है जिसके आत्मसात् मात्र से राज्य देश भर में अपनी विशिष्ट छवि का परचम लहरा सकता है। आत्मनिर्भरता वह उर्जा है जिसके उपयोग से देश दुनिया का सिरमौर बन सकता है। देश में स्वावलंबन के सपने को साकार करने के लिए सरकारें समय-समय पर अनेकों प्रावधान करतीं रहीं हैं। परंतु आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को हासिल करने से हम अभी भी कोसों दूर हैं। स्वावलंबन के सपने को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने गत अप्रैल माह 20 लाख करोड़ रुपये के मेगा पैकेज की घोषणा की है। जिसका शुरुआती असर देश के कुछ गांवों में दिखना भी शुरू हो गया है। विशेष पैकेज का मुख्य उद्देश्य देश के गांव, ग्रामीण, गरीब, मजदूर, मजबूर, शोषित और कृषक वर्ग को आर्थिक सहायता प्रदान करना है। ताकि उनके धंधों को इस विकट परिस्थिति में कुछ राहत हासिल हो सकें। क्योंकि लॉकडाउन के आकस्मिक प्रभाव ने देश के निम्न तबके को सर्वाधिक प्रभावित किया है। फलस्वरूप सरकार की इस विशिष्ट पहल की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। यह कहना भी गलत होगा कि अब तक की सरकारों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। लेकिन इतना सुनिश्चित है कि भारत आज भी आत्मनिर्भरता की बाट जोह रहा है। जिस कद्र देश में संसाधन उपलब्ध हैं उस कद्र आज देश समृद्ध नहीं है। हमारे लक्ष्य और कार्यशैली में सदा से भेद रहा है। वास्तव में भारत में आत्मनिर्भरता की राहों का आगाज गांवों से ही प्रतीत होता है। बावजूद इसके प्रशासकीय उपेक्षा का शिकार हमारे गांव आज आजादी के 72 वर्ष बाद भी पिछड़े ही हैं। जब तक हम ग्राम की संपन्नता के बारे नहीं विचारेंगे तब तक न तो हमारे आंतरिक व्यापार की दशा सुधरेगी और न ही विदेशी व्यापार की दिशा। देशवासियों में चाइनीज और अमेरिकी वस्तुओं का फोबिया इतना बढ गया है कि वह देश के लिए हानिकारक साबित होने पर उतारू हैं। हमारी इस विशिष्ट आदत से सीधे तौर पर विदेशियों को लाभ तथा देशवासियों को हानि हो रही है।

आज कोरोना काल में हम एक दम विदेशी मॉडल को त्याग कर स्वदेशी मॉडल को अपनाने के लिए उतावले हो रहें हैं। जो एकाएक संभव नहीं है। यदि हमारी सरकारों व देशवासियों ने वक्त रहते इस अहम कड़ी की ओर ध्यान दिया होता तो आज स्थिति काफी बेहतर होती। तब शायद ही हमें आज चीन की अमानवीय चालाकियों का सामना करना पडता। यदि देश ने वक्त रहते भौतिकता के इस मायावी मोह को त्याग कर यथार्थवाद को अपनाया होता तो दुनिया आज भारत की ओर टकटकी लगाने को मजबूर होती। भारत में आज भी सैकड़ों ऐसे द्वार विद्यमान है जो देश को विश्व गुरु बनाने का मादा रखते हैं। हमारे गांवों में आज भी हजारों ऐसे संसाधन उपलब्ध हैं जो देश की तकदीर व गाँवों की तस्वीर बदल सकते हैं।

एक सच्चाई यह भी है कि हम सदियों से शहर की ओर भाग रहे हैं, हमने शुरू से ही गांवों को नगण्य आंका है लेकिन कोरोना संक्रमण के एक मात्र प्रहार ने हम सब को गांव के सुखद एहसास का स्मरण दिला दिया। आज सभी अगडे पिछड़े, अमीर-गरीब, मालिक-मजदूर गांवों की ओर दौड़ रहे हैं। आज वे लोग भी गांव में अपने घर तलाश रहे हैं जो दशकों पूर्व यहाँ से विलायत चले गए थे। यदि हमारें गाँव देशवासियों को वैश्विक महामारी से सुरक्षित बचाने की शक्ति रखते हैं तो उनमें इतना दम भी है कि वे देश को आत्मनिर्भरत बना सकते हैं। क्योंकि गाँव में वे सभी संसाधान विद्यमान है जो राष्ट्र की उन्नति के लिए अनिवार्य है। यदि सरकार गांव के विकास के प्रति अपनी कृतसंकल्पता दर्शाती है तो ये भारत को सहजता से आत्मनिर्भर बना सकते हैं तथा देश को दुनिया में बेहतरीन साबित कर सकते हैं। अतरू सरकार को इस ओर और विचार विमर्श करने की जरूरत है। ◆◆◆ **लेखक स्तंभकार एवं विचारक हैं।**

स्वार्थ अभिशाप और प्रेम आशीर्वाद है

... दलाल

सुबह सूर्योदय हुआ ही था कि एक वयोवृद्ध डॉक्टर के दरवाजे पर आकर घंटी बजाने लगा। सुबह-सुबह कौन आ गया? कहते हुए डॉ. क्टर की पत्नी ने दरवाजा खोला। वृद्ध को देखते ही डॉक्टर की पत्नी ने कहा, 'दादा आज इतनी सुबह? क्या परेशानी हो गयी आपको?' वयोवृद्ध ने कहा, 'मेरे अंगूठे के टांके कटवाने आया हूं, डॉक्टर साहब के पास।' मुझे 8.30 बजे दूसरी जगह पहुंचना होता है, इसलिए जल्दी आया। सॉरी डॉक्टर।

डॉक्टर के पड़ोस वाले मोहल्ले में ही वयोवृद्ध का निवास था, जब भी जरूरत पड़ती वह डॉक्टर के पास आते थे। इसलिए डॉक्टर उनसे परिचित था। उसने कमरे से बाहर आकर कहा, 'कोई बात नहीं दादा। बैठो। बताओ आप का अंगूठा।' डॉक्टर ने पूरे ध्यान से अंगूठे के टांके खोले, और कहा कि,' दादा बहुत बढ़िया है। आपका घाव भर गया है। फिर भी मैं पट्टी लगा देता हूं कि कहीं पर चोट न पहुंचे। डॉक्टर तो बहुत होते हैं परंतु यह डॉक्टर बहुत हमदर्दी रखने वाले और दयालु थे। डॉक्टर ने पट्टी लगाकर के पूछा,' दादा आपको कहां पहुंचना पड़ता है 8.30 बजे। आपको देर हो गई हो तो मैं चलकर आपको छोड़ आता हूं।' वृद्ध ने कहा कि,' नहीं. नहीं डॉक्टर साहब, अभी तो मैं घर जाऊंगा, नाश्ता तैयार करूंगा, फिर निकलूंगा,और बराबर 9.00 बजे पहुंच जाऊंगा।' उन्होंने डॉक्टर का आभार माना और जाने के लिए खड़े हुए। बिल लेकर के उपचार करने वाले तो बहुत डॉक्टर होते हैं, परंतु दिल से उपचार करने वाले कम होते हैं। दादा खड़े हुए तभी डॉक्टर की पत्नी ने आकर कहा कि दादा नाश्ता यहीं कर लो। वृद्ध ने कहा कि,' ना बेन। मैं तो यहां नाश्ता यहां कर लेता, परंतु उसको नाश्ता कौन कराएगा।' डॉक्टर ने पूछा, 'किस को नाश्ता कराना है? तब वृद्ध ने कहा कि, 'मेरी पत्नी को।' तो वह कहां रहती है? और 9.00 बजे आपको उसके यहां कहां पहुंचना है? वृद्ध ने कहा,'डॉक्टर साहब वह तो मेरे बिना रहती ही नहीं थी, परंतु अब वह अस्वस्थ है।' तो नर्सिंग होम में है? डॉक्टर ने पूछा-क्यों, उनको क्या तकलीफ है। वृद्ध व्यक्ति ने कहा, 'मेरी पत्नी को अल्जाइमर हो गया है, उसकी याददाश्त चली गई है। पिछले 5 साल से वह मेरे को पहचानती नहीं है। मैं नर्सिंग होम में जाता हूं, उसको नाश्ता खिलाता हूं, तो वह फटी आंख से शून्य नेत्रों से मुझे

देखती है। मैं उसके लिए अनजाना हो गया हूं।' ऐसा कहते-कहते वृद्ध की आंखों में आंसू आ गए।डॉक्टर और उसकी पत्नी की आंखें भी गीली हो गई'। याद रखें! प्रेम निस्वार्थ होता है, प्रेम सब के पास होता है परंतु एक पक्षीय प्रेम! यह दुर्लभ है। पर होता है जरूर।कबीर ने लिखा है,' प्रेम ना बाड़ी उपजे, प्रेम न हाट बिकाय।' बाजार में नहीं मिलता है यह। डॉक्टर और उसकी पत्नी ने कहा, 'दादा 5 साल से आप रोज नर्सिंग होम में उनको नाश्ता करने जाते हो? आप इतने वृद्ध। आप थकते नहीं हो, ऊबते नहीं हो ? उन्होंने कहा कि, 'मैं तीन बार जाता हूं, डॉक्टर साहब उसने जिंदगी में मेरी बहुत सेवा की और आज मैं उसके सहारे जिंदगी जी रहा हूं। उसको देखता हूं तो मेरा मन भर आता है। मैं उसके पास बैठता हूं तो मुझ में शक्ति आ जाती है। अगर वह न होती तो अभी तक मैं भी बिस्तर पकड़ लेता, लेकिन उसको ठीक करना है, उसकी संभाल करना है, इसलिए मुझ में रोज ताकत आ जाती है। उसके कारण ही मुझ में इतनी फूर्ती है। सुबह उठता हूं तो तैयार होकर के काम में लग जाता हूं। यह भाव रहता है कि उसको मिलने जाना है, उसके साथ नाश्ता करना है, उसको नाश्ता कराना है। उसके साथ नाश्ता करने का आनंद ही अलग है। मैं अपने हाथ से उसको नाश्ता खिलाता हूं।' डॉक्टर ने कहा दादा एक बात पूछूं, पूछो ना डॉक्टर साहब। डॉक्टर ने कहा दादा,' वह तो आपको पहचानती नहीं, न तो आपके सामने बोलती है, न हंसती है,तो भी तुम मिलने जाते हो।' तब उस समय वद्ध ने जो शब्द कहे, वह शब्द दुनिया में सबसे अधिक हृदयस्पर्शी और मार्मिक हैं। वृद्ध बोले, डॉक्टर साहब-वह नहीं जानती कि मैं कौन हूं, पर मैं तो जानता हूं ना कि वह कौन है और इतना कहते-कहते वृद्ध की आंखों से पानी की धारा बहने लगी। डॉक्टर और उनकी पत्नी की आंखें भी भर आई। कहानी तो पूरी होगी परंतु पारिवारिक जीवन में स्वार्थ अभिशाप है, और प्रेम आशीर्वाद है। प्रेम कम होता है तभी परिवार टूटता है। अपने घर में अपने माता-पिता को प्रेम करना, जो लोग यह कहते हैं अपने पिता के लिए कि 'साठी बुद्धि न्हाटी', उनको यह कथा 10 बार पढ़वाना। यह शब्द, 'वह नहीं जानती कि मैं कौन हूं परंतु मैं तो जानता हूं' यह शब्द शायद परिवार में प्रेम का प्रवाह प्रवाहित कर दें।' अपने वो नहीं, जो तस्वीर में साथ दिखें,' 'अपने तो वो हैं, जो तकलीफ में साथ दिखें!' ◆◆◆

तिलमिलाए चीन और पाक

... राकेश सेन

हाल ही में भारत ने गिलगिट-बाल्टिस्तान में पाकिस्तानी सरकार द्वारा चुनाव करवाने से रोकने और भारतीय मौसम विभाग द्वारा इन स्थानों के मौसम के बुलेटिन जारी करने के फैसले के बाद जिस तरह से चीन और पाक तिलमिलाए हैं उसी का ही परिणाम है कि इन देशों ने अपने बचाव में भारत को उलझाने के लिए नेपाल को आगे कर दिया है। नेपाल के मंत्रिमण्डल ने अपने देश का नया राजनीतिक नक्शा जारी किया है। इसमें लिम्पियाधुरा कालापानी और लिपुलेख को नेपाल की सीमा का हिस्सा दिखाया गया है। नेपाल का दावा है कि महाकाली शारदा नदी का स्रोत दरअसल लिम्पियाधुरा ही है जो फिलहाल भारत के उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले का हिस्सा है। भारत इससे इनकार करता रहा है। नेपाल का फैसला भारत की ओर से लिपुलेख इलाके में सीमा सड़क के उद्घाटन के दस दिनों बाद आया है। लिपुलेख से होकर ही मानसरोवर जाने का रास्ता है। दरअसल छह महीने पहले भारत ने अपना नया राजनीतिक नक्शा जारी किया, जिसमें जम्मू-कश्मीर को दो केंद्र शासित प्रदेशों जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के रूप में दिखाया गया है। इसमें लिम्पियाधुरा, कालापानी और लिपुलेख को स्वाभाविक रूप से भारत का हिस्सा बताया गया है। लिपुलेख वो इलाका है जो चीन, नेपाल और भारत की सीमाओं से लगता है। उत्तराखंड के धारचूला के पूरब में महाकाली नदी के किनारे नेपाल का धारचूला जिला पड़ता है। महाकाली नदी नेपाल-भारत की सीमा के तौर पर भी काम करती है।

नेपाल का कहना है कि इस समझौते के लिए न तो भारत ने और न ही चीन ने उसे भरोसे में लिया जबकि प्रस्तावित सड़क उसके इलाके से होकर गुजरने वाली थी।

साल 1816 में ब्रिटेन व नेपाल के बीच हुई सुगौली की संधि पर हस्ताक्षर के 204 साल बाद नेपाल ने यह मुद्दा उठाया है। दो सालों तक चले ब्रिटेन-नेपाल युद्ध के बाद ये समझौता हुआ था जिसके तहत महाकाली नदी के पश्चिमी इलाके की जीती हुई जमीन पर नेपाल को अपना कब्जा छोडना पड़ा था। हाल ही में नेपाल के प्रधानमंत्री निवास 'बालुआटार' में आहूत सर्वदलीय बैठक में पीएम केपी शर्मा ओली ने बताया कि वे भारत द्वारा सड़क बनाए जाने की कार्यवाहियों से अनभिज्ञ थे। लेकिन सुनने में यह अजीब लगता है कि जो विवादित इलाका नेपाल की राजनीति का केंद्र बना हुआ है, वहां की गतिविधियों से ओली अनभिज्ञ थे। 1962 में युद्ध के समय से ही यहां पर इंडो-तिब्बत बार्डर पुलिस की तैनाती भारत ने कर रखी है। नेपाल के दावे का कोई दस्तावेजी आधार नहीं है कि नेपाल की लिखित अनुमति से यहां पर इंडो-तिब्बत बार्डर पुलिस की तैनाती हुई। 1962 के युद्ध के तीस साल बाद, 1992 में चीन और भारत ने लिपुलेख दर्रे से व्यापारिक मार्ग खोला था। कैलाश मानसरोवर जाने के लिए भी इस मार्ग का इस्तेमाल होता रहा है। प्रो। लोकराज बराल 1996 में नई दिल्ली में नेपाल के राजदूत रह चुके हैं, ने माना था कि नेपाल के पास सुगौली संधि के समय में भी नक्शा तैयार करने के संसाधन नहीं थे। नेपाल उस दौर में भी ब्रिटिश इंडिया के नक्शे पर आश्रित था।

नेपाल ने पहली बार 1962 के दौर में इस इलाके में बाउंडरी की दावेदारी की थी। सितंबर, 1961 में जब कालापानी विवाद उठा था, उस समय भारत-नेपाल की तत्कालीन सरकारों ने तय किया था कि द्विपक्षीय बातचीत के आधार पर हम इसे सुलझा लेंगे। 2 दिसंबर, 1815 को सुगौली समझौते पर हस्ताक्षर हुआ था और उसे 4 मार्च, 1816 को कार्यान्वित किया गया था। कितना दिलचस्प है कि नेपाल के पास 205 साल पुराना नक्शा नहीं है। सवाल पैदा होता है कि कमजोर एतिहासिक साक्ष्यों व दावों के बावजूद कम्यूनिस्ट शासित नेपाल ऐसे विवाद को क्यों हवा दे रहा है जिसका कोई आधार नहीं। साफ है कि नेपाल की भूमिका केवल शंख की है जिसमें फूंक चीन-पाकिस्तान मार रहे हैं। कोई गलत हरकत करने से पहले नेपाल को सौ बार सोचना चाहिए कि भारत के साथ उसके एतिहासिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक व आध्यात्मिक रिश्ते भी हैं।' राजनीतिक रूप से चाहे नेपाल एक अलग देश है परन्तु सांस्कृतिक रूप से वह भारत का ही विस्तृत अंग है। चीन और पाकिस्तान के हाथों खेलने में केवल और केवल नेपाल का ही नुक्सान है। ◆◆◆

आत्मनिर्भर भारत अभियान नवजागरण और पुनर्जागरण का अभिप्राय

... वरूण कुमार

भारत, 'वसुधैव कुटुंबकम' की धारा का प्रसार करने और राष्ट्रहित की भावना को विकसित करने में अहम भूमिका निभाने वाला देश है। एशिया के अग्रणी राष्ट्रों में शामिल भारत देश विश्व में ज्ञान व प्रेम के भाव का जनक माना जाता है। वर्तमान में राष्ट्र की बागडोर एक ऐसे सशक्त व्यक्तित्व के हाथों में है, जिसने पिछले लगभग एक दशक के दौरान समग्र विश्व का ध्यान आकर्षित किया है। यहां भारतीय प्रधानमंत्री भाई मोदी का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है, जिनका मुख्य उद्देश्य देश को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में ला खड़ा करना है। भारत जैसे विशाल देश के लिए विकसित राष्ट्र बन पाना कोई असंभव कार्य नहीं किंतु ऐसी बहुत सारी चुनौतियां हमारे समक्ष खड़ी हैं, जिनका सामना करना और पार पाना वर्तमान की आवश्यकता है। इन्हीं चुनौतियों का सामना करने हेतु 'आत्मनिर्भर भारत' या 'वोकल फॉर लोकल' को केंद्र में लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उद्योग परिसंघ की बैठक के दौरान प्रधानमंत्री जी के द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि 'आत्मनिर्भर भारत', इस अभियान को गति प्रदान करना जरूरी है, क्यूंकि आज देश जिस स्थिति में है, उसमें कई सारी चुनौतियां हमारे समक्ष बांहे फैलाए खड़ी हैं। एक ओर जहां विदेशी बाजारों से प्रतिस्पर्धा हेतु मानव संसाधन, वित्तीय संसाधन इत्यादि जुटाने और तकनीकी विकास पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी हो जाता है, वहीं पड़ोस की और इन पड़ोसियों को उकसाने वाली विदेशी आक्रमणकारी वर्तमान में कोरोना नाम की वैश्विक महामारी ने भी संसार की कमर तोड़ने का काम किया है। भारत से अधिक चिंताजनक हालात उन देशों के हैं, जो विकसित राष्ट्र कहलाते हैं। इससे न केवल जनजीवन प्रभावित हुआ है, विश्व की अर्थव्यवस्था को भी भारी क्षति उठानी पड़ी है। उद्योगों में रोजगार व वित्त के हालात भी बुरे दौर में हैं। लाखों की संख्या में लोग नौकरी छोड़ रहे हैं या उद्योगों में कर्मचारियों की छंटनी की शुरुआत भी हो चुकी है। ऐसे समय में यदि हमारे प्रधानमंत्री महोदय ने 'वोकल फॉर लोकल' को आधार बनाकर कई लाख करोड़ के पैकेज की घोषणा की है, तो अवश्य ही इसमें राष्ट्र के आर्थिक रूप से अपरिपक्व और कमजोर वर्ग के उत्थान को धयान में रखते हुए ही यह निर्णय लिया गया है। स्वदेशी बाजार में इलेक्ट्रॉनिक्स, आयुर्वेद, औषधीय क्रिया-कलाप, कृषि एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित संसाधनों, उत्पादों को विकसित करने की अत्यावश्यक है। इसके अतिरिक्तइन संसाधनों की गुणवत्ता पर भी ध्यान देना जरूरी हो जाता है क्यूंकि कुछ विकसित राष्ट्रों की तुलना में हमारे यहां संसाधानों की गुणवत्ता बढ़ाने पर कोई विशेष विचार नहीं किया जाता। चीन और अन्य एशियाई देशों में बनने वाले उत्पादों की भारत में बहुत अधिक मांग है, और यही कारण है कि हम अपनी जरूरतों के लिए इन देशों पर आश्रित हैं। कार्यक्रमों के प्रति अपना ध्यान आकृष्ट करे। प्रिंट और सोशल मीडिया व टेलीविजन पर भी इन जागरूकता कायक्रमों को मुख्य रूप से प्रचारित व प्रसारित किया जाए, और साथ ही जमीनी स्तर पर और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि आने वाले दशक में 'आत्मनिर्भर भारत' का सुंदर स्वप्न एक वास्तविक रूप लेकर सामने आ सके। प्रगतिशील भारत का सपना अब होगा साकार, आत्मनिर्भर बनेगा भारत, ढोकर अपना खुद का भार।

गांव-गांव, कस्बों,
कूचों तक पहुंचाएं यह नारा,
सुख संपन्नता से परिपूर्ण हो
आत्मनिर्भर राष्ट्र हमारा।।

देश में बहुत सारे लोग कृषि पर निर्भर रहते हैं। गांवों में कृषि योग्य भूमि की बहुतायत है और भूमि की उर्वरा शक्ति भी कृषि उत्पादन

के अनुकूल है।

हाल ही में देखा गया है कि कोरोना की बीमारी के चलते ग्रामीण क्षेत्रों के बहुत सारे लोग अपनी जमीन में भारी मात्रा में सब्जियों का उत्पादन करने में लगे हैं, इनमें अधिकतर ऐसे लोग भी शामिल हैं, जोकि नौकरी छोड़ अपने घरों को वापिस लौट आए हैं। अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए सब्जियों के उत्पादन को आजीविका कमाने का साधन भी बनाया है, जोकि प्रशंसनीय है। मशरूम उत्पादन के प्रोजेक्ट लगाने, पॉली हाऊस निर्माण के लिए मुख्य रूप से पचास से अस्सी फीसदी तक सब्सिडी का प्रावधान विभिन्न प्रदेश सरकारों द्वारा किया गया है, जिनका लाभ लेकर हम आत्मनिर्भर बन सकते हैं। आवश्यकता केवल इतनी है कि देश का हर नागरिक आत्मनिर्भरता संबंधी इन कार्यक्रमों के प्रति अपना धयान आष्ट करे। प्रिंट और सोशल मीडिया व टेलीविजन पर भी इन जागरूकता कार्यक्रमों को मुख्य रूप से प्रचारित व प्रसारित किया जाए, और साथ ही जमीनी स्तर पर और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि आने वाले दशक में 'आत्मनिर्भर भारत'' का सुंदर स्वप्न एक वास्तविक रूप लेकर सामने आ सके। प्रगतिशील भारत का सपना अब होगा साकार, आत्मनिर्भर बनेगा भारत, ढोकर अपना खुद का भार। गांव-गांव, कस्बों, कूचों तक पहुंचाएं यह नारा, सुख संपन्नता से परिपूर्ण हो आत्मनिर्भर राष्ट्र हमारा।। ◆◆◆

वैश्विक मंच पर भारत के बढ़ते कदम

... प्रत्यूष शर्मा

हाल ही में गुटनिरपेक्ष आंदोलन समूह द्वारा शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया, इस आभासी सम्मेलन की मेजबानी अजरबैजान ने की। इस सम्मेलन में 30 से अधिक राष्ट्र अध्यक्षों ने भाग लिया। हमारे देश की तरफ से इस बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भाग लिया और उन्होंने सदस्य देशों से कोविड-19 रूपी महामारी से लड़ने के लिए अपने अनुभवों और सुझावों को साझा करने के साथ-साथ ही शोध एवं संसाधनों के क्षेत्र में सहयोग करने को बढ़ावा देने के लिए कहा।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन समूह का नया रूप-जिसको 'नाम-2.0' भी कहा जा रहा है, इकीसवीं सदी में भारत की विदेश नीति के मूल सिद्धांतों की पहचान करवाता है और हमारे देश को रणनीतिक स्वायत्तता के साथ-साथ ही मूल्य प्रणाली को सहेज कर रखने में मददगार है।

अभी हाल ही में भारत सरकार और एशियाई इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक ने कोरोना से निपटने के लिए 500 मिलियन डक्लर की 'कोविड -19 आपातकालीन उपाय एवं स्वास्थ्य प्रणाली तैयारी परियोजना' संबंधी समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस परियोजना के तहत भारत के सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल किया गया है।

हाल ही में भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी को विभिन्न कार्यक्रमों, सेवाओं और बुनियादी सुविधाओं जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए दो मिलियन डॉलर की वित्तीय सहायता दी थी। भारत का यह योगदान संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी की फंडिंग की कमी के कारण उत्पन्न हुए वित्तीय संकट से निपटने में मदद करेगा।

जी-20 के देशों द्वारा कोविड-19 महामारी से निपटने और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए शिखर सम्मेलन का आयोजन सऊदी अरब की अधयक्षता में किया गया इसमें जी-20 समूह के देशों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के नेतृत्व वाले कोविड-19 एकजुटता प्रतिक्रिया कोष में 5 ट्रिलियन डॉलर से अधिक धन के योगदान की प्रतिबद्धता जाहिर की थी। जी-20 आर्थिक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक और वित्तीय एजेंडा के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग हेतु एक मुख्य मुख्य मंच है और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 80: , वैश्विक व्यापार के 75: तथा पूरे विश्व की जनसंख्या के दो तिहाई हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है । इस मौके पर भी भारत ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन सहित अन्य प्रणालियों को मजबूत कर किए जाने की आवश्यकता है और वायरस के लिए कोई अंतरराष्ट्रीय सीमा नहीं होती है इसीलिए इस महामारी से लड़ने के लिए पारदर्शी, मजबूत और विज्ञान आधारित वैश्विक प्रतिक्रिया के साथ एकजुट होने की जरूरत है। हमारे देश ने 'ऑपरेशन संजीवनी' नामक एक अभियान भी चलाया था जिसमें भारतीय वायु सेना ने ऑपरेशन संजीवनी के माध्यम से आवश्यक दवाइयों तथा अस्पतालों के उपयोग संबंधी 6.2 टन सामग्री को मालदीव तक पहुंचाया था। मालदीव की सरकार के अनुरोध पर भारतीय वायुसेना ऑपरेशन संजीवनी शुरू किया तथा परिवहन विमान के माधयम से इस सामग्री को मालदीप पहुंचाया। भारतीय सेना का 14 सदस्य मेडिकल दल एक वायरल परीक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए मालदीप भी गया था, इसके साथ-साथ भारत सरकार द्वारा मालदीप को 5.5 टन आवश्यक दवाएं उपहार के रूप में दी गई।

हाल ही में यूरोप के एक देश एस्तोनिया में आयोजित हो रही 'हैक द क्राइसिस' नामक कार्यक्रम की तर्ज पर भारतीय केंद्र सरकार ने 'हैक द क्राइसिस-इंडिया' नामक ऑनलाइन हैकाथॉन शुरू की थी। इस हैकाथॉन का उद्देश्य कोरोना वायरस के लिये एक व्यावहारिक समाधान खोजना और इस महामारी के खिलाफ लड़ाई को और मजबूत बनाना है। इस महामारी के समय में भी भारत की जी-20 में सक्रिय भूमिका यह दर्शाती है कि वैश्विक स्तर पर भारत विश्वगुरु बनने की राह पर है और इस महामारी के समय में भी बाकी देशों की यथा संभव मदद कर रहा है।

◆◆◆लेखक बैंकिंग से जुड़े और स्तम्भकार हैं।

कानपुर और आगरा मेट्रो प्रोजक्ट के लिए चाइनीज कंपनी की निविदा रद्द

चीन को आर्थिक मोर्चे पर भारत द्वारा दी जाने वाली शिकस्त का लसिला जारी है।चीन को एक और झटका देने के लिए आगरा मेट्रो प्रोजेक्ट के लिए चाईनीज कंपनी के टैंडर को रिजेक्ट कर दिया है। उत्तर प्रदेश मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने कानपुर-आगरा मेट्रो परियोजनाओं के लिए मेट्रो ट्रेनों की आपूर्ति, टेस्टिंग कमिशनिंग और ट्रेन कंट्रोल सिग्नलिंग सिस्टम का कॉन्ट्रैक्ट बॉम्बार्डियर ट्रांसपोर्ट इंडिया को दिया है। यह भारतीय कंपनियों का एक समूह है। कानपुर और आगरा मेट्रो परियोजनाओं हेतु कुल 67 ट्रेनों की सप्लाई होगी, जिनमें से प्रत्येक ट्रेन में 3 कार या कोच होंगे, जिनमें से 39 ट्रेनें कानपुर, 28 ट्रेनें आगरा के लिए होंगी।

एक ट्रेन की यात्री क्षमता लगभग 980 होगी यानि प्रत्येक कोच में लगभग 315-350 यात्री यात्रा कर सकेंगे। यूपीएमआरसी के प्रबंध निदेशक कुमार केशव ने बताया कि रोलिंग स्टॉक्स सिग्नलिंग सिस्टम के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मक बिडिंग की गयी थी, जिसके तहत 4 अंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने टैंडर प्रक्रिया में हिस्सा लिया और 18 नवरी, 2020 को अपनी निविदाएं यूपीएमआरसी को सौंपी थी। इसमें विस्तृत जांच करके आंकलन करने के बाद बिड में शामिल चीनी कंपनी को अयोग्य घोषित किया गया है। फाइनेंशियल बिड के लिए तीन बिडर्स को चुना गया है, सबसे कम बोली लगाने वाली कंपनी कॉन्सोर्सियम में बॉम्बार्डियर इंडिया प्राइवेट लि. को 3 जुलाई, 2020 को कॉन्ट्रैक्ट दे दिया गया। कानपुर और आगरा मेट्रो परियोजनाओं को मिलने वाली अत्याधुनिक ट्रेनों की सप्लाई में बॉम्बार्डियर के सावली स्थित प्लान्ट से होगी। केंद्र सरकार की मेक इन इंडिया मुहिम को भी सुदृढ़ बनाने की दिशा में यूपीएमआरसी इसे एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखता है।

कानपुर-आगरा मेट्रों के लिए चीनी कंपनी की निविदा को तकनीकी खामियों के चलते रिजेक्ट किया है। चीन की कंपनी सीआरआरसी नैनजिंग पुजहेन लिमिटेड ने भी निविदा भरी थी, लेकिन तकनीकी खामियों के कारण चीनी कंपनी को अयोग्य घोषित कर दिया गया। कॉर्पोरेशन ने कानपुर और आगरा मेट्रो परियोजनाओं के लिए मेट्रो ट्रेनों की आपूर्ति, परीक्षण और चलाने, ट्रेन कंट्रोल और सिग्नलिंग सिस्टम का ठेका भारतीय समूह बॉम्बार्डियर ट्रांसपोर्ट इंडिया लिमिटेड को दिया है।◆◆◆

हीरो साइकिल ने रद्द किया चीन के साथ 900 करोड़ का आर्डर

चीन से साथ तनाव के बीच सरकार द्वारा डिजिटल 59 चाइनीज एप्प को बंद करने के बाद अब हीरो साईकिल भी चीन को झटका देने के लिए तैयार है। हीरो साईकिल के एमडी पंकज मुंजाल ने चीन के साथ 900 करोड़ का व्यापार बंद करने की बात कही है। हीरो साईकिल के आर्डर कैंसल करने की घोषणा को चीन पर सीधा ट्रेड स्ट्राईक माना जा रहा है।हीरो साईकिल की तरफ से हाई एंड साईकिल निर्माण के लिए पुर्जे पहले चीन से आयात किये जाते थे।प्रतिवर्ष चीन से 300 करोड़ का व्यापार होता था।

भाई-बहन के रिश्तों की अटूट डोर रक्षाबंधन

... गोपाल दत्त शर्मा

हमारा देश त्यौहारों व पर्वो का देश है यहा हर महीने कोई ना कोई त्यौहार अवश्य मनाया जाता है इसी कडी मे रक्षा बंधन का पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। वर्ष 2020 में यह 03 अगस्त के दिन मनाया जाएगा। यह पर्व भाई-बहन के रिश्तों की अटूट डोर का प्रतीक है। भारतीय परम्पराओं का यह एक ऐसा पर्व है, जो केवल भाई बहन के स्नेह के साथ-साथ हर सामाजिक संबन्ध को मजबूत करता है। इस लिये यह पर्व भाई-बहन को आपस में जोडने के साथ साथ सामाजिक महत्व भी रखता है। रक्षा बंधन के महत्व को समझने के लिये सबसे पहले इसके अर्थ को समझना होगा। 'रक्षाबंधन दो शब्दों से मिलकर बना है। इस दिन भाई अपनी बहन को उसकी दायित्वों का वचन अपने ऊपर लेते हैं। रक्षा बंधन का पर्व विशेष रुप से भावनाओं और संवेदनाओं का पर्व है। एक ऐसा बंधन जो दो जनों को स्नेह की धागे से बांध ले। रक्षा बंधन को भाई-बहन तक ही सीमित रखना सही नहीं होगा। बल्कि ऐसा कोई भी बंधन जो किसी को भी बांध सकता है। भाई-बहन के रिश्तों की सीमाओं से आगे बढ़ते हुए यह बंधन आज गुरु का शिष्य को राखी बांधना, एक भाई का दूसरे भाई को, बहनों का आपस में राखी बांधना और दो मित्रों का एक-दूसरे को राखी बांधना, माता-पिता का संतान को राखी बांधना हो सकता है। आज के परिपेक्ष्य में राखी केवल बहन का रिश्ता स्वीकारना नहीं है अपितु राखी का अर्थ है, जो यह श्रद्धा व विश्वास का धागा बांधता है। वह राखी बंधवाने वाले व्यक्ति के दायित्वों को स्वीकार करता है। उस रिश्ते को पूरी निष्ठा से निभाने की कोशिश करता है। वर्तमान समाज में हम सब के सामने जो सामाजिक कुरीतियां सामने हैं उन्हें दूर करने में रक्षा बंधन का पर्व सहयोगी हो सकता है। आज जब हम बुजुर्ग माता-पिता को सहारा ढूंढते हुए वृद्ध आश्रम जाते हुए देखते हैं, तो अपने विकास और उन्नति पर प्रश्न चिन्ह लगा हुआ पाते है। इस समस्या का समाधान राखी पर माता-पिता को राखी बांधना, पुत्र-पुत्री के द्वारा माता पिता की जीवन भर हर प्रकार के दायित्वों की जिम्मेदारी लेना हो सकता है। इस प्रकार समाज की इस मुख्य समस्या का समाधान किया जा सकता है।

इस प्रकार रक्षा बंधन को केवल भाई बहन का पर्व न मानते हुए हम सभी को अपने विचारों के दायरे को विस्तृत करते हुए, विभिन्न संदर्भों में इसका महत्व

समझन
ा होगा। आज समय के साथ पर्व की शुभता में कोई कमी नहीं आई है, बल्कि इसका महत्व ओर बढ गया है। आज के सीमित परिवारों में कई बार, घर में केवल दो बहनें या दो भाई ही होते हैं, इस स्थिति में वे रक्षा बंधन के त्यौहार पर मासूस होते हैं कि वे रक्षा बंधन का पर्व किस प्रकार मनाएंगे। उन्हें कौन राखी बांधेगा या फिर वे किसे राखी बांधेगी। इस प्रकार कि स्थिति सामान्य रुप से हमारे आसपास देखी जा सकती है। अगर इस दिन बहन-बहन, भाई-भाई को राखी बांधता है तो इस प्रकार की समस्याओं से निपटा जा सकता है। यह पर्व सांप्रदायिकता और वर्ग-जाति की दिवार को गिराने में भी मुख्य भूमिका निभा सकता है। जरुरत है तो केवल एक कोशिश की।

पहाडी संस्कृति मे रक्षा बंधन

हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों मे आज भी यह पर्व पारंपरिक अंदाज मे मनाया जाता है। यहा हर गांव का परिवार मे इस दिन कुल पुरोहित अपने सभी यजमानों के घर जाते है और पूरे परिवार को कलावा रक्षा बंधन बांधते हैं और पूरे दिन भर यह प्रक्रिया चलती है रक्षा बंधन बांधने के बाद पुरोहित अपने अपने यजमानों को चावल या सरसो के दाने देते है जिसे स्थानीय भाषा मे रक्षा का चावल कहा जाता है यहा पूरे ग्रामीण क्षेत्रों मे रक्षा बंधन के 14 दिनो के बाद डगैली यानि डायनों का पर्व मनाया जाता है और ऐसा माना जाता है कि यह दिन डायनों का होता है और इस लिए इस दिन रक्षा बंधन के दिन पुरोहित द्वारा दिये गये रक्षा के चावलों को अपने घर, खेत खलिहान गौ शालाओं में डालते है ताकि डायने उनको कोई नुकसान ना पंहुचा सके और इसके साथ साथ पुरोहित द्वारा रंक्षा बंधन के दिन बांधे गये कलावे को भी यजमानों द्वारा डगैली पर्व के बाद ही खौला जाता है ऐसी मान्यता है कि यह पुरोहित द्वारा बांध गया रक्षा सूत्र भी डायनों से रक्षा करता है इस लिए इसे डगैली पर्व तक हाथ से नही हटाया जाता । आज जब हम रक्षा बंधन पर्व को एक नये रुप में मनाने की बात करते है, तो हमें समाज, परिवार और देश से भी परे आज जिसे बचाने की जरुरत है, वह सृष्टि है, राखी के इस पावन पर्व पर हम सभी को एक जुड होकर यह संकल्प लें, राखी के दिन एक स्नेह की डोर एक वृक्ष को बांधे और उस वृक्ष की रक्षा का जिम्मेदारी अपने पूरे लें। वृक्षों को देवता मानकर पूजन करने मे मानव जाति का स्वार्थ निहित होता है। जो प्रकृति आदिकाल से हमें निस्वार्थ भाव से केवल देती ही आ रही है, उसकी रक्षा के लिये भी हमें इस दिन कुछ करना चाहिए। हमारे शास्त्रों में कई जगह यह उल्लेखित है कि- जो मानव वृक्षों को बचाता है, वृक्षों को लगाता है, वह दीर्घकाल तक स्वर्ग लोक में निवास पाकर देवराज इन्द्र के समान सुख भोगता है। पेड-पौधे बिना किसी भेदभाव के सभी प्रकार के वातावरण में स्वयं को अनुकुल रखते हुए, मनुष्य जाति को जीवन दे रहे होते है। इस धारा को बचाने के लिये राखी के दिन वृक्षों की रक्षा का संकल्प लेना, बेहद जरूरी हो गया है। आईये हम सब मिलकर राखी का एक धागा बांधकर एक वृक्ष की रक्षा का वचन लें। ◆◆◆

कोरोना योद्धा सम्मान के साथ मातृवन्दना और कैलेण्डर का विमोचन

कोरोना महामारी के दौर में प्रिंट मीडिया में भारी बदलाव आया है। समाचार पत्र और पत्रिकाओं को पाठकों तक पहुंचाना एक चुनौती बन गया है। इस चुनौती को स्वीकार करके इस परिदृश्य को पूरी तरह से बदलने के प्रखर प्रयास हो रहे हैं। यह विचार मातृवन्दना मासिक पत्रिका के विमोचन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचार प्रमुख महीधर प्रसाद ने व्यक्त किये। मातृवन्दना संस्थान ने हर वर्ष की भांति इस बार भी प्रदेश की सबसे अधिक प्रसारित होने वाली जागरण पत्रिका मातृवन्दना के विशेषांक एवं कैलेण्डर विमोचन का एक संक्षिप्त कार्यक्रम शिमला के नाभा में आयोजित किया। कोविड-19 महामारी के कहर के बीच यह कार्यक्रम स्वास्थ्य विभाग के सभी निर्देशों का पालन करते हुए सम्पन्न किया गया। कोरोना महामारी में प्रेरणा स्त्रोत बने कोरोना योद्धाओं को इस अवसर पर सम्मानित किया गया, जिसमें आईजीएमसी शिमला माईक्रोलॉजी विभागाध्यक्ष डा। सांत्वना वर्मा, सुरक्षा कर्मी शीतल और वरिष्ठ चिकित्सा अधीक्षक डा। जनक राज शामिल रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्व हिन्दू परिषद् के प्रांत अध्यक्ष लेखराज राणा ने की। मुख्य वक्ता महीधर प्रसाद ने अपने उद्बोधन में कोरोना काल में प्रिंट मीडिया की भूमिका के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रिंट का विकल्प आज इंटरनेट में सूचना प्रसारण के हजारों विकल्प समझे जा रहे हैं, लेकिन एक साथ जब हजारों तरह की सूचनाएं पाठकों तक पहुंचती है तो वह तेजी से स्मृति पटल से गायब हो जाती हैं। जबकि मुद्रित सामग्री बहुत ही प्रभावी माध्यम है जिसका असर व्यापक रूप से लोगों पर पड़ता है। इसके साथ ही इंटरनेट पर मौजूद सूचनाओं की विश्वसनीयता पर भी संदेह बना हुआ है। इसलिए मुद्रित सामग्री की ताकत पहले की तरह ही प्रभावी है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि व कोरोना योद्धा डॉ0 सांत्वना वर्मा का कहना था कि टेस्टिंग कोरोना से निपटने का निदान नहीं है बल्कि इसके लिए स्वास्थ्य विभाग के सभी निर्देशों का पालन करते हुए सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। पत्रिका के सह संपादक वासुदेव शर्मा ने 'देव संस्कृति में समरसता का प्रवाह' विषय पर जानकारी दी। साथ ही कोरोना के समय में पत्रिका के संपादन के दौरान आने वाली चुनौतियों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के समापन अवसर पर मातृवन्दना संस्थान के अध्यक्ष अजय सूद ने उपस्थित अतिथियों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम मंच का संचालन मातृवन्दना संपादक मंडल की सदस्य अर्चना गुलेरिया ने किया। इस अवसर पर मातृवन्दना संस्थान के सचिव जयसिंह ठाकुर, पत्रिका प्रमुख शांति स्वरूप, विश्व संवाद केंद्र प्रमुख दलेल सिंह ठाकुर, नीतू वर्मा, विहिप के संगठन मंत्री नीरज दौनेरिया सहित अन्य गणमान्य जन उपस्थित रहे।◆◆◆

सेवा भारती ने कोविड फंड में दिया एक लाख रूपए का अंशदान

सेवा भारती के प्रधान डॉ सुरेन्द्र शर्मा ने सीएम जयराम ठाकुर को एक लाख रूपए का चेक भेंट किया। शिमला मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर को हिमाचल प्रदेश सेवा भारती के प्रधान डॉ। सुरेंद्र शर्मा ने सेवा भारती की ओर से एचपी-एसडीएमए कोविड-19 स्टेट डिजास्टर रिस्पांस फंड के लिए एक लाख रूपए का चेक भेंट किया उन्होंने पीएम केयर्ज फंड के लिए भी एक लाख रूपये का अंशदान किया। मुख्यमंत्री ने इस पुनीत कार्य के लिए उनका आभार व्यक्त किया। सेवा भारती हिमाचल प्रदेश के सचिव रणदेव सिंह और कोषाध्यक्ष विजय शर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे।◆◆◆

पॉलिथीन पर्यावरण को प्रदूषित करने में सबसे बड़ा घटक

प्रेरणा मीडिया द्वारा 'कोरोना काल में प्रकृति का संदेश एवं पर्यावरण के प्रति हमारा सामाजिक दायित्व' विषय पर वेबीनार का आयोजन किया गया। वेबिनार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय पर्यावरण विभाग के सह संयोजक श्री राकेश जैन ने संबोधित किया। श्री राकेश जैन ने वेबीनार को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिनिधि सभा के ग्वालियर बैठक में पर्यावरण नाम से एक नई गतिविधि की शुरुआत की गई। उन्होंने कहा कि संघ ने तीन बिंदुओं-पेड़ लगाओ, पानी बचाओ, पॉलिथीन हटाओ को ध्यान में रखकर पर्यावरण विषय पर काम को आगे बढ़ाया।

राकेश जैन ने दिल्ली का जिक्र करते हुए कहा कि दिल्ली में नवंबर और दिसंबर में प्रदूषित हवा के कारण जो दम घोंटू वातावरण रहता है उसका कारण पेड़ों का कम होना, पश्चिमी हवाओं से धूल के कणों का दिल्ली में प्रवेश और दिल्ली की बाहरी सीमाओं पर 3 बड़े कूड़े के ढेरों का होना है। इन कूड़े के ढेरों में एक लाख 40 हजार करोड़ टन कूड़ा पड़ा हुआ है जो 70 एकड़ में फैला हुआ है और इनकी ऊंचाई कुतुबमीनार से दुगनी है। दिल्ली के गाजीपुर में, मकरबा चौराहे के पास और द्वारका स्थित इन कूड़े के ढेरों से जो जहरीली गैस निकलती है उनसे भी दिल्ली का पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

राकेश जैन ने पेड़ो की महत्ता स्पष्ट करते हुए कहा कि पेड़ों के बिना जीवन संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि पानी को बनाया नहीं जा सकता अपितु पानी को केवल बचाया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि पॉलिथीन पर्यावरण को प्रदूषित करने में सबसे बड़ा घटक है। खाने के अवशेषों को पॉलिथीन में रखकर लोगों द्वारा फेंकने से गोवंश की जान खतरे में है क्योंकि सड़क पर घूमने वाले गोवंश इन पॉलिथीनों को खा जाते हैं जिससे उनकी जान चली जाती है। इस पॉलिथीन का निस्तारण करने की आवश्यकता है। पॉलिथीन को जमीन पर नहीं डालने का संकल्प सभी नागरिकों को लेना होगा। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कल्याण सिंह रावत ने उत्तराखंड में चल रहे मैती आंदोलन के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण को सार्थक तथा प्रभावी रूप से सफल बनाने के लिए उन्होंने भावनात्मक स्वरूप देकर मैती आंदोलन की आधारशिला रखी।

मैती आंदोलन के बारे में उन्होंने बताया कि इसमें विवाह उत्सव पर बेटी अपने जीवन साथी के साथ मिलकर एक यादगार वृक्ष लगाती है।

बेटी के विदा होने के बाद स्वत: ही मां अपनी बेटी के लगाए पेड़ की सुरक्षा तथा देखभाल की जिम्मेदारी बड़ी सजगता के साथ करती है। गांव की बेटियों के द्वारा शादी में लगाए गए यह पेड़ गांव के भविष्य के खुशहाली और समृद्धि के कारक बन जाते हैं।

उन्होंने बताया की 1995 से अब तक लगभग 5 लाख से अधिक शादियों में पेड़ लग चुके हैं। वृक्षारोपण का यह आंदोलन अब एक प्राकृतिक संस्कार का रूप ले चुका है। कई राज्यों और देशों ने इस पहल को स्वीकारोक्ति दी है। कार्यक्रम की अधयक्षता मेरठ सिविल कोर्ट के अधिवक्ता श्री सतीश कुमार बालियान ने की। कार्यक्रम का संचालन प्रेरणा मीडिया सेंटर के कार्यक्रम संयोजक प्रमोद कामत ने की। प्रमोद कामत ने बताया कि आगामी 21, 22 और 23 जुलाई को प्रेरणा मीडिया सेंटर द्वारा खिलाफत आंदोलन विषय पर वेबीनार का आयोजन किया जाएगा जिसमें गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति श्री भगवती प्रकाश शर्मा खिलाफत आंदोलन के तथ्यों को दर्शकों के सामने रखेंगे।

◆◆◆

शक्ति पीठों को विवादों से बचाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी

... राजेश वर्मा

शक्ति पीठों में उपजे विवाद आस्था व विश्वास पर चोट करते हैं। शक्ति पीठों को विवादों से बचाकर ही आस्था व विश्वास को बनाए रखा जा सकता है। लेकिन कई बार इस विश्वास और आस्था पर समाज के चंद लोग चोट पहुंचाने का काम कर देते हैं, हो सकता है उनके जीवन में आस्था व विश्वास का कोई विशेष महत्व न हो परंतु वह भूल जाते हैं कि ऐसे भी बहुत से लोग हैं जिनके जीवन-मरण में आस्था व विश्वास एक ऐसा तत्व है जिसके बिना न तो उनके दिन की शुरुआत होती और न ही अंत। इस संवेदनशील मुद्दे पर प्रशासन ने हरकत में आते देर न लगाई और विवाद के निपटारे के लिए अपनी तरफ से भी प्रयास शुरू कर दिए। बात ज्वालामुखी मंदिर व गोरख डिब्बी मंदिर के बीच भूमि के किसी टुकड़े पर हो रहे निर्माण की ही नहीं, बात है उन लोगों की जो विश्वभर से दूर-दराज के क्षेत्रों से यहां सिर्फ और सिर्फ उम्मीदों के उन सपनों के लेकर आते हैं जिनकी शायद कहीं और पूरे होने की उम्मीदें खत्म हो जाती हैं। मेरी तरह जो भी श्रद्धालु जब ज्वालामुखी जाते हैं तो वह इस विश्वास व सोच को लेकर नहीं जाते कि यह मंदिर सिर्फ माँ ज्वाला जी का है या केवल गोरख डिब्बी का ही यहां विशेष महत्व है। जो भी यहां आता है वह सच्चे मन से आता है उनके लिए दोनों एक दूसरे के पूरक हैं दोनों का अपना-अपना और एक दूसरे के साथ ही महत्व है।

गुरु गोरख नाथ जी ने निकलने से पहले वहां एक कुण्ड बनाया यह वही कुण्ड है जिसे आज गोरख डिब्बी के नाम से जाना जाता है। आज भी इस जल से खिचड़ी पकाई जा सकती है देखने में यह जल उबलता हुआ प्रतीत नजर आता है लेकिन जल को स्पर्श करने पर पता चलता है कि यह तो शीतल जल है। किसी को नहीं पता था कि गुरु गोरखनाथ की माया से उनका खप्पर न तो कभी भरेगा और न ही कोई भर पाएगा क्योंकि गुरु गोरखनाथ माँ से अपने लिए ही खिचड़ी नहीं बनवाना चाहते थे वे तो पूरी दुनिया के लिए माँ का चूल्हा चिरकाल तक जलाकर रखना चाहते थे। सभी द्वारा अन्न डालने पर भी जब खप्पर नहीं भरा तो लोगों ने योगी के चमत्कार को मानते हुए अपने शीश श्रद्धा भाव से झुका लिए। उस दिन से ही यहाँ पर खिचड़ी दान की परंपरा शुरु हुई जो आज तक उसी आस्था व श्रद्धा के साथ चल रही है। आज भी माँ ज्वाला देवी जी का चूल्हा गुरु गोरखनाथ जी के इंतजार में जल रहा है और कहते हैं कि सतयुग में गुरु गोरखनाथ जी वापस लौटकर जरूर आएंगे। आज जो विवाद श्री ज्वालामुखी मंदिर न्यास और गोरख डिब्बी मंदिर के बीच में पनपा है उससे लोगों को गहरा आघात लगा है।

दोनों ही मंदिर एक ही जगह स्थित हैं श्रद्धालुओं के लिए यह मायने नहीं रखता कि कौन सी भूमि एक के नाम है और कौन सी दूसरे के नाम उनके लिए माँ ज्वाला जी ही गोरख डिब्बी है और गोरख डिब्बी ही माँ ज्वाला जी। कितना अच्छा होता प्रशासन को निशानदेही के लिए परेशान करने से पूर्व ही इस विवाद को दोनों पक्षों द्वारा मिलजुल कर हल कर लिया जाता लेकिन शायद वे ये भूल गए कि अकबर ने माँ की ज्वाला बुझाने के लिए जो नहर मंदिर के इर्द-गिर्द खुदवा दी थी उसके निशान भी यहीं मौजूद हैं, ज्वाला तो आजदिन तक नहीं बुझ पाई, लेकिन ऐसे विवादों के चलते आस्था व विश्वास की ज्योति जरूर कम होती है।

यह भी हो सकता है कि किसी के लिए यह विवाद अहम और वहम का मुद्दा हो लेकिन वे ये क्यों भूल गए कि इसी अंहकार में अकबर द्वारा चढ़ाया गया सवा मन सोने का छत्र भी ऐसी धातु में बदल गया था जिसका आज दिन तक विज्ञान भी पता नहीं लगा सका कि यह कौन सी धातु है। सबको जीतने वाला मुगल शासक अकबर माँ ज्वालाजी में आकर हार गया लेकिन आज भूमि विवाद के मुद्दों से लोगों की आस्था को क्यों हराया जा रहा है?दोनों पक्षों को यह बात भी समझनी चाहिए कि जिन श्रद्धालुओं ने कभी भी दोनों मंदिरों को अलग-अलग नहीं समझा फिर क्यों उनके दिलों में विभाजन किया जा रहा है? आपका भूमि विवाद तो किसी न किसी निशानदेही से खत्म हो जाएगा लेकिन लोगों के दिलों में जो निशान रह जाएंगे क्या वह कभी मिट पाएंगे यह सोचने वाली बात होगी। ◆◆◆

मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना का औचित्य

... कर्म सिंह ठाकुर

हिमाचल प्रदेश के रोजगार कार्यालयों में करीब 8.34 लाख युवा रोजगार के लिए पंजीकृत हैं। हर वर्ष दो लाख युवा नौकरियां प्राप्त करने के लिए अपना पंजीकरण करवाते हैं। क्या इन युवाओं को सरकारी क्षेत्र में रोजगार मिल पाएगा। कोरोना जैसी महामारी ने जहां युवाओं का निजी क्षेत्र से भी रोजगार छीन लिया तो क्या ऐसी परिस्थिति में हिमाचल प्रदेश सरकार इतनी बड़ी तादाद में सरकारी कार्यालयों में रजिस्टर्ड युवाओं को रोजगार दे पाएगी। इस प्रश्न का हल खोजने के लिए यदि पिछले एक दशक की सरकारों की कार्यप्रणाली पर नजर डाली जाए तो यह स्पष्ट जाहिर होता है कि प्रदेश सरकार भी युवाओं को सरकारी क्षेत्र के बजाए अपने घर द्वार के समीप सरकारी तंत्र की सहायता से स्वरोजगार के मार्ग प्रशस्त करने के अनेकों प्रयास करती दिखी है। प्रदेश सरकारों द्वारा समय-समय पर निजी क्षेत्र के उद्योगों में भी 70 से 75: रोजगार केवल हिमाचलियों को देने का प्रावधान किया है लेकिन वर्तमान में तो निजी क्षेत्र में कार्यरत अनेकों युवा अपने रोजगार को खोकर चारदीवारी में कैद होने को मजबूर हो गए हैं। विशेष तौर पर पर्यटन, होटल, टी-स्टॉल, भोजनालय, ड्राइवर इत्यादि व्यवसाय से जुड़े अधिकतर युवा बेरोजगारी की भयंकर मार झेल रहे हैं। ऐसे में प्रदेश सरकार युवाओं के हितों को संरक्षित करने वाली मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना वरदान से कम नहीं है। हिमाचल सरकार ने प्रदेश के युवाओं को स्वरोजगार एवं रोजगार से जोड़ने के लिए 'मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना' शुरू की है। यह योजना 18 से 45 वर्ष के उन युवाओं के लिए शुरू की है जो उद्योग, सर्विस सेक्टर, व्यापार स्थापित करना चाहते हैं। किसी भी कार्य को शुरू करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पूंजी होती है। यदि इन युवाओं को सही मार्गदर्शन के साथ पूंजी की व्यवस्था हो जाए तो प्रदेश का युवा वर्ग नए आयाम स्थापित कर सकता है। सरकार निवेश मशीनरी पर 25 प्रतिशत अनुदान प्रदान कर रही है, जबकि महिलाओं को 30 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जा रहा है।

चालू वित्त वर्ष के बजट में सरकार ने योजना के तहत 45 वर्ष तक की आयु की विधवाओं को 35 प्रतिशत अनुदान प्रदान करने का निर्णय लिया है। इस योजना के तहत 1605 मामलों को स्वीकृति प्रदान की गई है, जिसके तहत लाभार्थियों को 312 करोड़ रुपये के ऋण प्रदान किए जाएंगें। इस ऋण राशि पर 74.70 करोड़ रुपये का अनुदान प्रदान किया है। मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना और औद्योगिक निवेश नीति-2019 का लाभ उठाने के लिए emerginghimachal-hp-gov-in वेबसाइट पर लॉग ईन करके आवेदन किया जा सकता है। आवेदन करने की प्रक्रिया बहुत ही सरल है। कुछ ही दिनों में संबंधित अधिकारी आवेदन कर्ता से संपर्क साध कर उनके प्रपोजल को स्वीकृति प्रदान करके संबंधित बैंक को लेटर जारी करके आगे की प्रक्रिया के लिए प्रेषित करते हैं। उसके बाद उम्मीदवार को संबंधित बैंक में जाकर लोन अधिकारी से मुलाकात करके आगे का डॉक्युमेंटेशन वर्क करना होता है। लेकिन बहुत से युवाओं को बैंकों की जटिल लोन की प्रक्रिया से गुजरने में अनेकों समस्याओं का समाधान करना पड़ता है। बहुत से केस विभाग द्वारा स्वीत कर दिए जाते हैं लेकिन बैंकों द्वारा युवाओं को अनेक चक्कर लगवाए जाते हैं।

बैंक अधिकारियों की अकड़बाजी, फालतू कागजों की फॉर्मेलिटीज तथा लीगली बाइंडिंग युवाओं को इस योजना के लाभ से वंचित करती है। संबंधित विभाग के अधिकारियों को रिव्यू मीटिंग में बैंकों की इस त्रुटि को दूर करने के लिए कठोर कदम उठाने होंगे। लॉकडाउन के बीच में भी नशीले पदार्थों के तस्करों के अनेकों मामले सामने आए। प्रदेश में आत्महत्या के केसों में भी बढ़ोत्तरी देखने को मिल रही है। पुलिस मुख्यालय के आंकड़ों के मुताबिक लॉकडाउन के दौरान अप्रैल और मई महीने में ही 121 हिमाचलियों ने आत्महत्या की है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में क्या समाज के बुद्धिजीवियों तथा सरकारी तंत्र के आला अधिकारियों को युवाओं द्वारा उठाए जा रहे हैं। इस तरह के कदमों के प्रति सचेत करने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। अति शीघ्र सरकार द्वारा युवाओं की मार्गदर्शन तथा स्वरोजगार के नवीन साधनों के सृजन में सरकारी सहायता से संबंधित जानकारियों को पंचायत स्तर पर विभिन्न तरह के कैंपों के माध्यम से प्रेषित करना होगा ताकि हिमाचल के छोटे से छोटे गांव का युवा वर्ग भी सरकारी तंत्र की मदद से अपने लिए रोजगार के नवीन मार्ग सृजित करने में सक्षम बन सके।◆◆◆ **लेखक राजकीय सेवा में और स्तम्भकार हैं।**

कर्तव्य परायण और निष्ठावान कार्यकर्ता का अवसान

मातृवन्दना संस्थान के संस्थापक सदस्यों में से एक और लम्बे समय तक संस्थान के उपाध्यक्ष रहे पीताम्बर जी का 6 जुलाई, 2020 प्रात:काल 63 वर्ष की आयु में अपने निवास स्थान ग्राम-उच्चागांव, कुनिहार में आकस्मित निधन हो गया। स्व0 पीताम्बर जी बाल्यकाल से ही स्वयंसेवक थे। द्वितीय सर संघ चालक श्री गुरूजी के समय में सन् 1973 में उन्होंने संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण-अबोहर, पंजाब में लिया था। तब वे 10 वीं कक्षा में पढ़ रहे थे। लगभग 47 वर्ष तक संघ की गतिविधियों में सम्मिलित होते हुए, पीताम्बर जी ने विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया। जिला सोलन के संघचालक एवं बौद्धिक प्रमुख भी रहे। उन्होंने जिला सोलन के संघचालक एवं बौद्धिक प्रमुख भी रहे। स्व. पीताम्बर जी हिमगिरी कल्याण आश्रम सोलन के फाउंडर सदस्यों में भी थे। संघ की विभिन्न गतिविधियों एंव कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने में तथा उनको कार्यान्वित करने में उन्हे अत्यंत आन्नद मिलता था।

अध्ययन में विशेष रूचि के फलस्वरूप उन्होंने प्रभाकर, एम.ए. (हिन्दी), एल.एल.बी (एकैडमिक) एवं पी. जी. डिप्लोमा इन जनरलिज्म एण्ड मास कॉम्यूनिकेशन शैक्षणिक डिग्री अर्जित की। पठन-पाठन में रूचि के कारण सन् 1975 में अपने ग्राम उच्चागांव में लघु पुस्तकालय की स्थापना की थी। हिमाचल प्रदेश वित निगम में नियुक्ति होने के पश्चात् 35 वर्ष की सेवा के बाद वर्ष 2015 में वे एसीस्टेंट जनरल मैनेजर के पद से सेवानिवत्त हुए। साधारण परिवार से संबंध रखने वाले पीताम्बर जी के पिता किसान थे एवं वह ग्रामीण परिवेशा मे पले बड़े थे।

वे 5 भाइयों मे सबसे बड़े और 3 बहनों से छोटे थे। संघ के प्रति निष्ठा और स्नेह के परिणाम स्वरूप इनके परिवार का भी संघ के प्रति आत्मीयता एवं अनुराग का भाव था। व्यक्ति उन्हें अपनी समस्याएं बताकर भूल सकते थे, किंतु वे ना केवल उन्हें याद रखते थे अपितु उनका चिंतन करके उनके निवारण की हरसंभव कोशिश

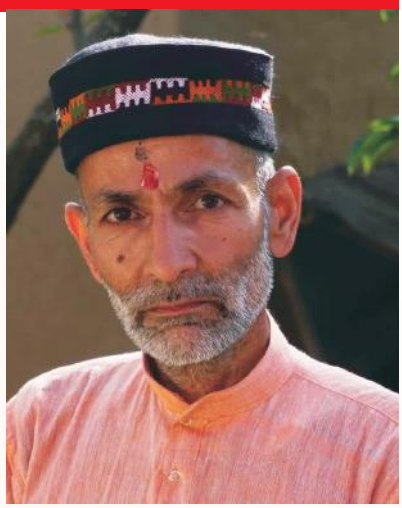

करते थे। बुद्धिजीवी होने के साथ ही वे हृदय से उदार भी थे। व्यक्ति में सब कुछ हासिल करने का सामर्थ्य देखते थे और परिश्रम करने की प्रेरणा देकर उनके पथ-प्रदर्शक बने। मृदुभाषी, विनम्रता, कर्तव्यपरायणता ये सब उनके विराट व्यक्तित्व विशेषताएं है। स्व. पीताम्बर जी के जीवन व मधुर स्मृतियों से हमें सदा प्रेरणा व प्रोत्साहन मिलता रहेगा। मातृवन्दना संस्थान स्व. पीताम्बर जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।◆◆◆

पश्चिम बंगाल में महिलाओं के बड़े संगठन महिला संहिती के संस्थापक विहिप से जुड़े हुए प्रसिद्ध समाजसेवी स्व. श्री तपन घोष का कोरोना के कारण आकस्मिक देहांत हो गया। मातृवन्दना संस्थान की ओर से दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि

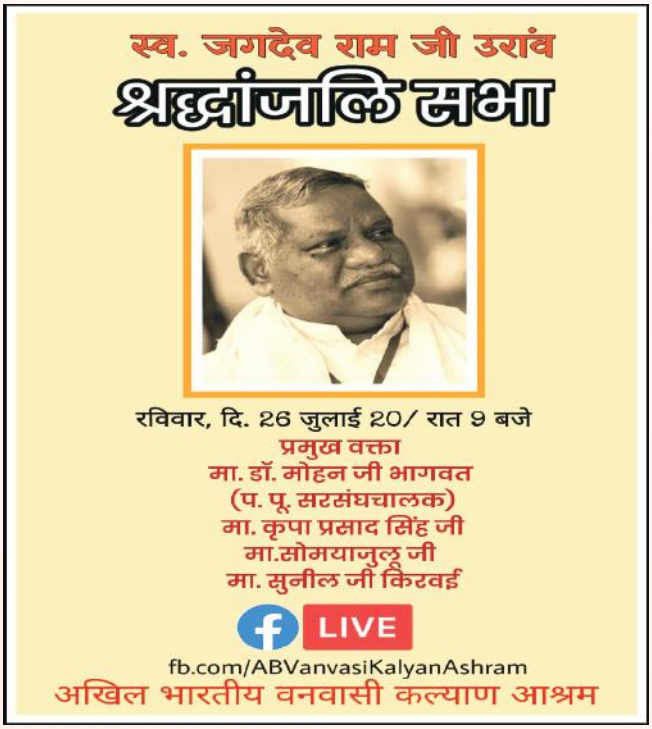

चीन की सीमा चीन की दीवार बाकी सब कब्जा

... संजय दलाल

विश्व संवाद केंद्र शिमला ने चीन की विस्तारवादी को सबक विषय पर 19 जुलाई रविवार का एक फेसबुक लाईव संवाद का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में भारत-तिब्बत सहयोग मंच और मुस्लिम राष्ट्रीय मंच और भारत नेपाली संस्कृति परिषद के मार्गनिर्देशक इंद्रेश कुमार ने चीन की विस्तावादी रवैये के बारे में लोगों को विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि चीन की नीति हमेशा से विस्तारवाद की रही है। उन्होंने कहा कि चीनी दीवार ही चीनी सीमा है बाकि सब कब्जा है यह बात आम लोगों को बताने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि चीन ने तिब्बत को हड़प लिया। आज बौद्ध धर्म गुरू दलाई लामा निर्वासित जीवनयापन कर रहे हैं। चीन ने शक्तिशाली होते ही यूनान पर कब्जा जमाना शुरू किया, मंगोलिया, तुर्किस्तान के झिंगयान, नेपाल और पाकिस्तान को भी सहायता के नाम पर कब्जा जमाना शुरू कर दिया है। चीन साम्राज्यवादी दृष्टिकोण के कारण अंधा हो गया है और वह पूरे विश्व के देशों को ललकार रहा है। उन्होंने पंचशील और भारत-चीन भाई-भाई जैसी बातों को देश को नुकसान पहुंचाने वाली बताया। उन्होंने चीन के खिलाफ भारतीय सैनिकों के पराक्रम और साहस की सराहना करते हुए कहा कि चीन की विस्तारवादी नीतियों से निपटने के लिए चीन का आर्थिक बहिष्कार करना होगा। इंद्रेश कुमार ने आम लोगों का आह्वान किया कि स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल को जन जागरण का अभियान बना लें। उनका मानना था कि चीन की अर्थव्यवस्था की कमर को तोड़ने के लिए सबसे आवश्यक अस्त्र चीनी माल का बहिष्कार ही है। उन्होंने चीनी माल पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि चीन का सामान आज हमारे घरों तक पहुंच गया है और चीनी माल की घुसपैठ हमारी जेबों तक भी पहुंच गयी है। इंद्रेश कुमार ने चीनी वायरस को भगाने में तीव्र प्रकाश और तेज ध्वनि की वर्षों पुरानी पद्धति का विस्तार से वर्णन किया। इस कार्यक्रम में तिब्बती निर्वासित सरकार की पूर्व गृहमंत्री श्रीमती ग्यारी डोलमा और विश्व संवाद केंद्र समिति के अध्यक्ष प्रो0 नरेंद्र शारदा उपस्थित रहे।◆◆◆

असहयोग आन्दोलन को वापस लेने से आजादी में विलंब हुआ

नोएडा। प्रेरणा मीडिया संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय वेबिनार के समापन सत्र को संबोधित करते हुए गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा के कुलपति प्रो.भगवती प्रकाश शर्मा ने कहा कि असहयोग आन्दोलन अगर वापस न लिया गया होता तो भारत 1923 में ही आजाद हो जाता। क्योंकि उस समय स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त हो चुका था। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने चौरी-चौरा काण्ड का हवाला देकर असहयोग आन्दोलन को वापस लेने का फैसला किया था। जबकि मोपला विद्रोह की हिंसा गांधी जी को नहीं दिखी लेकिन चौरी-चौरा काण्ड से असहयोग आन्दोलन को उन्होंने वापस ले लिया। प्रोफेसर भगवती प्रकाश ने कहा कि स्वाधीनता के लिए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने अथक प्रयास किया। आजाद हिन्द सेना मणिपुर और नागालैण्ड के जंगलों में अंग्रेजों को खदेड़ रही थी। उस समय नेहरू ने कहा था कि अगर सुभाष आते हैं तो हम उनका सामना करेंगे। आजाद हिन्द सेना के सैनिकों ने देश में जो माहौल बनाया था उसके कारण अंग्रेज डर गये थे। प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने कहा कि दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं होगा जो अपने इतने बड़े सेनानी को भुला देगा। नेता जी देश को अखण्ड भारत के रूप में आजाद कराने की ताकत रखते थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संयुक्त क्षेत्र प्रचार प्रमुख कृपाशंकर ने कहा कि हम सांस्कृतिक भारत की तरफ बढ़ रहे हैं। इस वेविबनार ने भूत वर्तमान और भविष्य की तरफ इशारा कर दिया है। भारत ने कोरोना संकट में यह सिद्ध कर दिया है कि जहां विश्व के कई देश धराशायी हो गये, वहीं भारत एक शक्ति के रूप में उभर कर सामने आया है। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरेन्द्र कुमार तनेजा ने कहा कि जो इतिहास हमारे विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है वह विशिष्ट विचारधारा के आधार पर नई पीढ़ियों को दुष्प्रभावित करने का प्रयास है। कांग्रेस की प्रारम्भ से ही मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति रही है। यही कारण रहा कि विभाजन का दंश देश को झेलना पड़ा। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईआईएमटी संस्थान समूह के प्रबंध निदेशक श्री मयंक अग्रवाल ने की। कार्यक्रम का संचालन किसान पीजी कॉलेज के अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष डा. नीलम कुमारी ने की।◆◆◆

पालेकर जी से प्रशिक्षण लेते ही छोड़ दी रसायनिक खेती-सफलता की ओर शेर सिंह

सोलन के गांव गम्बरपुल के किसान शेर सिंह पिछले एक साल से किसी कीटनाशक, फफूंदनाशक, खरपतवार नाशक और रासायनिक खादों का प्रयोग किये बिना 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि से सब्जियों की खेती कर सालाना लाखों रूपये कमा रहे हैं।

पालेकर जी से कुफरी •शिमला••में 6 दिन का प्रशिक्षण पाने के बाद इन्होंने सड़क पर घूमने वाली एक बेसहारा गाय को घर में बांध कर इसके गोबर–गोमूत्र से सीखी हुई विधि में प्रयोग होने वाले विभिन्न आदान बनाकर प्राकृतिक खेती करनी शुरू कर दी। अब इन्होंने देसी नस्ल की अधिक दूध देने वाली दो और गायें भी खरीद ली हैं। शेर सिंह के सब्जियों की खेती में सफल प्रयोग को देखते हुए अब आस–पास के किसान उनके खेतों में इस खेती विधि को देखने के लिए आ रहे हैं। अभी तक उनके साथ गांव के 12 अन्य किसान भी प्राकृतिक खेती विधि से जुड़ गये हैं।

"इससे पहले मैं रासायनिक खेती कर रहा था, इसमें लगातार बढ़ते खादों और कीटनाशकों के प्रयोग से मैं हमेशा खर्चों की चिंता में रहता था। लेकिन प्राकृतिक खेती ने मुझे अब चिंतामुक्त कर दिया है"

शेर सिंह का करेले का खेत

शताब्दियों तक तिब्बत का गुलाम रहा चीन

... रामेश्वर मिश्र पंकज

यह मानना कि 'चीन कभी गुलाम नहीं रहा, भारत में फैलाए गए झूठ का अनुसरण है। चीन अनेक बार गुलाम रहा है चीन शताब्दियों तक रुमंगोलों का गुलाम रहा। शताब्दियों तक तिब्बत का गुलाम रहा। कुछ समय जापान का गुलाम रहा। चीन का वर्तमान रूप रूस, इंग्लैंड, फ्रांस तथा USA की कृपा से 1948 ईस्वी में संभव हुआ है। उसके पहले तक वह प्रशांत महासागर के पेटे में चिपका हुआ सा छोटा सा राज्य था। यह बात बड़े विस्तार से अभिलेखों और प्रमाण सहित प्रोफेसर कुसुमलता केडिया जी अपने लेखों में दिखा चुकी हैं और पुस्तक भी लिख रही हैं। 17 वीं से बीसवीं शताब्दी ईस्वी की अवधि में चीन के अलग-अलग हिस्सों में इंग्लैंड, फ्रांस, पुर्तगाल और हालैंड का कब्जा रहा।

अफीम की खेती चीन में नहीं होती थी। केवल 'भारत में ही होती थी। यहां से अफीम लेकर इंग्लैंड, हॉलैंड, पुर्तगाल,

फ्रांस आदि गए और अफीम की बिक्री इस कदर बढ़ाई कि पूरा चीन देश अफीमची कहलाने लगा और वहां के लोग निठल्ले और कमजोर हो गए। दूसरे महायुद्ध में चीन द्वारा रूस की सहायता करने के कारण रूस, इंग्लैंड, फ्रांस तथा अमेरिका ने चीन को आस-पास के इलाकों पर कब्जा करने दिया और वहां कम्युनिस्ट शासन भी इन शक्तियों की योजना और संकेत से ही संभव हुआ।

उसके बाद से जवाहरलाल नेहरू सहित अनेक लोगों ने चीन की सेवा का बहुत काम किया। जवाहरलाल नेहरू ने तो भारत का बड़ा अंश चीन को समर्पित कर दिया। तिब्बत पर चीन का कब्जा होने दिया। तिब्बत से ऊपर का भारतीय हिस्सा चीन के कब्जे में जाने दिया। इस प्रकार चीन का यह राक्षसी स्वरूप तो 100 वर्ष से कम की चीज है और अगले कुछ वर्षों में बिखरने वाला है। इनके विषय में जानकारी प्राप्त किए बिना उसकी स्तुति करना उचित नहीं। ◆◆◆

अंतरराष्ट्रीय न्यायविदों का ऑनलाईन सम्मेलन

लखनऊ, 18 जुलाई। सिटी मोन्टेसरी स्कूल द्वारा 'वर्ल्ड डे फॉर इण्टरनेशनल जस्टिस 17 जुलाई के उपलक्ष्य में 'विश्व के मुख्य न्यायाधीशों का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' ऑनलाइन आयोजित किया गया, जिसमें ट्रिनिडाड एण्ड टोबैगो के राष्ट्रपति समेत विश्व के 13 देशों गुयाना, पनामा, इजिप्ट, नीदरलैण्ड, माल्टा, दक्षिण अफीका, अर्जेन्टीना, पेरू, कोस्टारिका, बोस्निया एण्ड हर्जेगोविना, टर्की, फिलीपीन्स आदि देशों न्यायाधीश, मुख्य न्यायाधीश व अन्य गणमान्य हस्तियों ने ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज कराई। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सी.एम.एस. संस्थापक व प्रख्यात शिक्षाविद् एवं 'इण्टरनेशनल कान्फ्रेन्स ऑफ चीफ जस्टिसेज ऑफ द वर्ल्ड' के संयोजक डा. जगदीश गांधी, सी.एम.एस संस्थापिका-निदेशिका डा. भारती गांधी एवं सी.एम.एस. प्रेसीडेन्ट प्रो. गीता गाँधी किंगडन ने भी ऑनलाइन शिरकत की। मुख्य न्यायाधीशों के इस ऑनलाइन अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एन्थोनी थॉमस एक्यूनिश कारमोना, रिपब्लिक ऑफ ट्रिनिडाड एण्ड टोबैगो के पांचवे राष्ट्रपति, कार्ल अशोक सिंह, पूर्व चांसलर ऑफ ज्यूडिशियरी, गुयाना, ग्रैसिएला डिक्सन, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट ऑफ जस्टिस, पनामा, डा. आदिल ओमर शेरीफ, डेप्यूटी चीफ जस्टिस, इजिप्ट,एंथोनी केशिया-एमबे मेन्डूवा, जज, इण्टरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट, नीदरलैण्ड, विन्सेन्ट ए.डी. गैटानों, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, माल्टा, मंडिसा, मुख्य न्यायाधीश, जज, सुप्रीम कोर्ट ऑफ अपील, दक्षिण अफीका, डॉ. रिकार्डो ली रोसी, जज, नेशनल सिविल कोर्ट ऑफ अपील्स, अर्जेन्टीना, जेस्फिा इजगा, जज, सुपिरियर कोर्ट ऑफ लीमा, पेरू, रोसा एसॉन, जज, क्रिमिनल कोर्ट ऑफ अपील, कोस्टारिका, मिरसाद स्ट्रीका, जज, कोर्ट ऑफ बोसनिया एण्ड हर्जेगोविना, मुस्तफा ओजमेन, पूर्व जज, सुप्रीम कोर्ट, टर्की, इस्माइल जी. खाँ, एटारनी एट लॉफ, फिलीपीन्स ने अपने सारगर्भित विचार रखे।

इस ऑनलाइन सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए न्यायविद्ों ने एक स्वर से कहा कि आज विश्व को शक्ति प्रदर्शन की नहीं अपितु सेवा भाव की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यद्रि आज शान्ति की खोज में है। इस सम्मेलन ने हमें शान्ति के लिए, सद्भाव के लिए तथा प्रेम के लिए कार्य करने का अवसर दिया है। न्यायविदों ने संकल्प व्यक्त किया कि वे अपने देश में अपनी सरकार के सहयोग से इस मुहिम को आगे बढायेंगे जिससे विश्व के सभी नागरिकों को नवीन विश्व व्यवस्था की सौगात मिल सके और प्रभावशाली विश्व व्यवस्था कायम हो सके। ◆uu

आओ विजय की ओर बढ़े

आओ अपने पग
विजय की ओर पढ़ाएं।
स्वदेशी उत्पाद अपनाएं,
चीनी उत्पाद को दूर भगाएं।
आओ हम सब मिलकर
भारत को मजबूत बनाएं।
जब अपने सैनिक हैं,
सीमाओं के प्रहरी,
तभी हम सो पाते हैं नींद गहरी।
वे वहां सीमाओं की रक्षा कर रहें,
तभी हम यहां स्वतन्त्र घूम रहे।
अपने जवान भारत माता की,
रक्षा करते-करते वीर गति को,
प्राप्त हो जाते।
उनका भी एक संसार है,
उनका भी एक परिवार है,
वे तो अपना कर्तव्य निभा जाते
लेकिन कुछ कर्तव्य है
अपना भी देश के प्रति।
सीमा पर तो हम हैं नहीं
फिर क्या हुआ?
चीनी सामान का तो हम
बहिष्कार कर सकते हैं,
चीनी अर्थव्यवस्था की रीढ़
तो हम तो हम तोड़ ही सकते हैं,
आओ हम सब मिलकर,
चीनी अर्थव्यवस्था पर प्रहार करें,
और अपने देश को एक शक्तिशाली
राष्ट्र के रूप में अग्रसर करें।
आओ हम सब मिलकर विजय की ओर बढ़ें।

जगदीश कुमार,
जमथल, बिलासपुर हि०प्र०

राममंदिर का रामायण

पाँच अगस्त बस पांच नही,
यह पंचामृत कहलायेगा!
एक रामायण फिर से अब,
राम मन्दिर का लिखा जाएगा!!
जितना समझ रहे हो उतना,
भूमि पूजन आसान न था!
इसके खातिर जाने कितने,
माताओं का दीप बुझा!!
गुम्बज पर चढ़कर कोठारी,
बन्धुओं ने गोली खाई थी!
नाम सैकड़ो गुमनाम हैं,
जिन्होंने जान गवाँई थी!!
इसी पांच अगस्त के खातिर,
पांच सौ वर्षो तक संघर्ष किया!
कई पीढ़ियाँ खपी तो खपी,
आगे भी जीवन उत्सर्ग किया!!
राम हमारे ही लिए नही बस,
उतने ही राम तुम्हारे हैं!
जो राम न समझ सके वो,
सचमुच किस्मत के मारे हैं!!
एक गुजारिश है सबसे बस,
दीपक एक जला देना!
पाँच अगस्त के भूमि पूजन में,
अपना प्रकाश पहुँचा देना!!
नहीं जरूरत आने की कुछ,
इतनी ही हाजरी काफी है!
राम नाम का दीप जला तो,
कुछ चूक भी हो तो माफी है!!

कविता नहीं यह सीधे-सीधे,
रामभक्तों को निमन्त्रण है!
असल सनातनी कहलाने का,
समझो कविता आमंत्रण है!!

पारस चंद जैन, जयपुर

पाअड़ी कबता : पता नथो था

देदेया जी टैम्म औणा,माहणुआं इक दु, नें नी लागोंणा
नक्के-मुअ, टक्की चलणा, दूर दूर जई खडोंणा
?रे ते बाअर ओणे ते डरणा, एरे रेई टैम्म पास करणां
बमार- हुमार जे ओई आदां ए कोई सुख स्नेहडा लेणे ते टअलना।
मरी मुक्की आंदा कोई ए तांमी उदे ?रे पास्से नी बढना
इतणां बुरा टैम्म भी औंणा, कुसीयो भी, हैन्नी पता था
देया वायरस चाइना बणांया, पूरे मुलखे कहर बराया
सड़कां रस्ते सुने ल्वदे, माहणु कतां कुते बिल्ले भी कअटई लुभदें।।
बणां रे जानवर रोड़ा पर मिलदे,, सांईस डाक्टरी
ओई फेल माहणुआ ओ मारणा रा चीनीयां खेलयाब्न्दा खेल
सरकांरा मता करा दीयां प्रयास पब्लिका दीता पूरा साथ
पूरे देह्रा क्या न करादे केनीं चीनीयां पर पाअरी पोआदें।
जेहड़ा बणेयां जानी रा दुह्रमन तिसीयो किठठे ओई कैंनी डरोंदे
हथ्थ जोडी मैं करणी मिणतां कम्मे वाजी ?रे तेमत निकअला
मन्दा मत कम्मा कुदा दिलड़ु मत जला हसि मखोलां जिदंडी बता
माहणु पुलीया अपणां आंपा तांई पेया जी, पूरा स्यापा
माहणुआं कितीयां पूरीयां हदांपार तांई फुता रा सारा संसार।।

सुषमा देवी, भरमाड़, ज्वाली जिला काड़ा,हि. प्र.

स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार

वेदों से प्रमाण

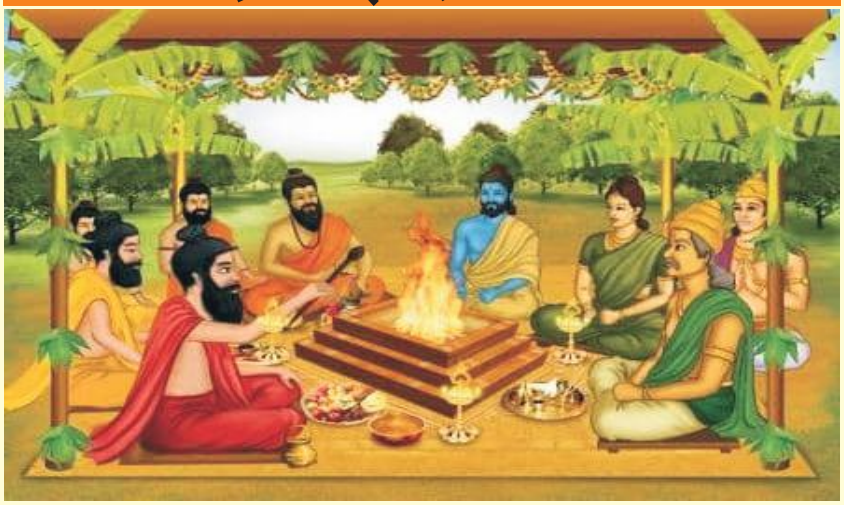

अर्थात्: परमेश्वर उपदेश करते हैं कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिये इस कल्याणी वेदवाणी का उपदेश करता हूँ वैसे सब मनुष्य किया करें। इसमें प्रजनेभ्य: शब्द तो है ही वैश्य, शूद्र और अति शूद्र आदि की गणना भी आ गई है। यह बड़ा सुस्पष्ट प्रमाण है वेद से की वेदों को पढ़ने का अधिकार ईश्वर ने सभी मन्युष्यों को दिया है।

प्राचीन काल की वेद विदुषी महिलाएँ

ऋषि मन्त्रद्रष्टा होते हैं, ऋषिकायें भी मन्त्रद्रष्टा होती हैं। लोपामुद्रा, गार्गी, मैत्रेयी इत्यादि कई इतिहास प्रसिद्ध ऋषिकायें हैं। सोलह ऋषिकाएँ ऋग्वेद में हैं।

संस्कारों में स्त्रियाँ मन्त्र पाठ करती थीं 'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत' ऐसा कर्मकाण्ड के ग्रन्थों में निर्देश है अत: स्त्री का मन्त्र पाठ स्वत: सिद्ध है।

कन्याओं का उपनयन

कन्याओं का भी उपनयन होता था और आज भी बहुत सारे वैदिक परिवारों में कन्याओं का उपनयन होता है और स्त्रियाँ यज्ञोपवीत पहनती हैं। सन्ध्या और अग्निहोत्र करती हैं, वेदपाठ भी करती हैं।

निर्णय सिन्धु तृतीय परिच्छेद में लिखा है –

'पुराकल्पे तु नारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते। अध्ययनश्च वेदानां भिक्षाचर्य तथैव च।।

इसमें यज्ञोपवीत और वेदों का अध्ययन दोनों का विधान है।

हारीत संहिता में दो प्रकार की स्त्रियों का उल्लेख हैं– ब्रह्मवादिनी सद्योवधू।

ब्रह्मवादिनी – तत्र ब्रह्मवादिनीनाम् उपनयनं अग्निविधानं वेदाध्ययनं स्वगृहे भिक्षा इति।

पराशर संहिता के अनुसार ब्रह्मवादिनी स्त्रियों का उपनयन होता है, वे अग्नि होत्र करती हैं, वेदाध्ययन करती हैं और अपने परिवार में भिक्षावृत्ति करती हैं।

सद्योबधू– 'सद्योबधूनां तू उपस्थिते विवाहे कथञ्चित् उपनयनं कृत्वा विवाह: कार्य:। 'सद्योवधू वे स्त्रियाँ हैं जिनका विवाह के समय उपनयन करके विवाह कर दिया जाता है। जैसा आजकल पुरुषों के विवाह में कई जगह होता है।'

वेद में उपनीता स्त्री

ऋग्वेद के मण्डल 10 सूक्त 109 मन्त्र 4 में लिखा है– 'भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता' यहाँ उपनीता जाया बहुत सुस्पष्ट है।

आचार्या और उपधयाया वे स्त्रियाँ है, जो स्वयं पढ़ाती हैं नहीं तो आचार्य की स्त्री आचार्यानी और उपाध्याय की स्त्रीउपाध्यायानी कहलाती हैं।

शंकर दिग्विजय में मण्डन मिश्र की पत्नी भारती देवी के विषय में लिखा है:–

'शास्त्राणि सर्वाणि षड्वेदान् काव्यादिकान्वेत्ति यदत्र सर्वम्' इसमें भारती देवी के षड्गवेदाधययन की बात सुस्पष्ट है।

कौशल्या का अग्निहोत्र

अग्निहोत्र में वेदमन्त्र बोले जाते हैं और कौशल्या अग्निहोत्र करती थी वाल्मीकि रामायण में अयोधया काण्ड अ: 20–15 श्लोक में द्रष्टव्य है:–

साक्षौमवसना हृष्टा नित्यं व्रतपरायणा।

अग्नि जुहोति स्म तदा मन्त्रवत्कृतमञ्जला।।

अर्थात, कौशल्या रेशमी वस्त्र पहने हुए व्रत पारायण होकर प्रसन्न मुद्रा में मन्त्र पूर्वक अग्निहोत्र कर रही थी। इसी प्रकार अयोध्या काण्ड आ० 25 श्लोक 46 में कौशल्या के यथाविधि स्वस्ति वाचन का भी वर्णन है।

सीता की सन्ध्या :

लंका में हनुमान सीता को खोजते हुए अशोक वाटिका में गये किन्तु उन्हें सीता न मिली। हनुमान ने वहाँ एक पवित्र जल वाली नदी को देखा। हनुमान को निश्चय था कि यदि सीता यहाँ होगी तो सन्ध्या का समय आ गया है और सीता अवश्य आयेंगी। सुन्दरकाण्ड अ० 14 श्लोक 49 में लिखा है:–

सन्ध्याकालमना: श्यामा धरुवमेष्यति जानकी। नदीं चेमांशुभजला संध्यार्थ वरवर्णिनी।।

अर्थात् वर वर्णिनी सीता इस शुभ जल वाली नदी पर सन्धया करने के निमित्त अवश्य आयेंगी। अत: वेद मंत्रों के प्रमाणों से सिद्ध है कि वेद मनुष्य मात्र के लिये हैं और 'धर्म जिज्ञासामानानां प्रमाणं परमं श्रुति: 'धर्म के लिये वेद परम प्रमाण हैं। वेदों की लोपामुद्रा, गार्गी, भारती आदि स्त्रियाँ विदुषी थीं और वेद पढ़ी थीं। आज भी वेद पढ़ती हैं।' ऊपर जितने भी प्रमाण दिए गये हैं, उनमे से दो प्रमाण तो वेद से ही हैं। जो पाखंडियों के सभी गलत सिद्धान्तों को धराशायी कर गलत सिद्ध कर देता है। इस बात की काट करते हैं कि स्त्रियां व शूद्र वेद नहीं पढ़ सकते। बाकी जितने भी प्रमाण अन्य ग्रन्थों से दिये गये हैं, उससे भी ये सिद्ध हो जाता है कि स्त्रियों का भी यज्ञोपवीत होता है, होता था और होता रहेगा। शुद्र व स्त्रियां तो क्या संसार के सभी मन्युष्यों को वेद पढ़ने का अधिकार प्राप्त है। ये स्वत: प्रमाणों से सिद्ध है।◆◆◆

गांव में होम क्वारंटाइन का मतलब

... राजेश निर्मल

जब भारत में करोना के मामले तेजी से बढ़ने लगे, तब होम क्वारंटाईन जैसा एक शब्द आंधी की तरह आया। जिसने न केवल भारत की चरमराई स्वास्थ्य सेवा की कड़वी सच्चाई को सामने ला दिया बल्कि इसकी कमीने कई जिंदगियों को उजाड़ कर रख दिया। पूरी तरह से प्लास्टिक पर निर्भर हो चुके इस दौर में एक बिमारी नें सबको प्लास्टिक में बांध दिया और इंसानी सभ्यता के मूल भाव प्रेम तथा स्पर्श को प्लास्टिक के मास्क और दस्ताने में कैद कर दिया। विकास की अंधी दौर में हम इंसानों ने खुद को जिस तरह से प्लास्टिक की दुनिया में कैद कर लिया था, उसका परिणाम आज सबके सामने है। नतीजा यह है कि आज हम एक के बाद एक न जाने कितनी ही समस्यांओ से जूझ रहे है। कोरोना संकट ने हमारी इस मुश्किल को और भी बढ़ा दिया है।

क्वारंटाईन के लिए अलग कमरा यानि होम क्वारंटाईन में रह कर बीमारी से बचने की परिकल्पना एक ख्वाब जैसी लगती है। जिस ख्वाब को देश की आबादी का कुछ प्रतिशत हिस्सा ही देख सकता है। फिर इस ख्वाब को कानून में ढाल कर भारतीय समाज पर लादना कितना सही है? हम उसी की पड़ताल करते है उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के एक गांव रामपुर बबुआन में। जब मैं इस गांव को देखता हूं और फिर करोना से बचाव के नियम तथा क्वारंटाईन की परिस्थिति को देखता हूं, तो लगता है कि हम जो नियम विदेश से उठा कर अपने देश पर लाद रहे हैं, क्या जमीनी स्तर पर वह कारगर सिद्ध हो पायेंगे?

इस संबंध में एक ग्रामीण गीता देवी का कहना है कि यह देहात का सिस्टम है, कब तक घरो में बंद रहकर काम चलेगा? लाठी डंडे के जोर पर अगर बंद कर भी दिया तो ज्यादा से ज्यादा एक दिन। इससे ज्यादा नही हो सकता है। आखिर गाय भैस भी तो है, वह सरकारी कायदे कानून नही समझते हैं। उन्हें भी भूख लगती है। उनको तालाब ले जाना पड़ता है। चराना और घुमाना पड़ता है। उनसे नहीं कहा जा सकता कि एक महीने तक खूंटी से बंधे रहो, क्योंकि बाहर करोना है। 'गीता देवी का कहना था कि गांव में बहुत सी चीजे सामूहिक रूप में होती हैं। जिनसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पूरा गांव जुड़ा होता है। हर परिवार का परिवेश और शिक्षा का स्तर, दूसरे परिवार से अलग है। इसी क्रम में गीता देवी कहती है कि जैसे पांच परिवारो के बीच में एक सरकारी नल है और प्रत्येक परिवार में आठ सदस्य हैं।

शहर में रहने वाला एक इंसान बड़ी आसानी से अपने आप को एक कमरे में बंद करके खुद को दुनिया से अलग कर सकता है। बड़ी-बड़ी सोसाइटी और अपार्टमेंट में अक्सर मैंने देखा भी है। मगर हाशिए का आदमी इसके सामने कैसे टिकेगा?शहर से कुछ किलोमीटर दूर जब आप बाहर निकलते हैं तो आपको सड़कें और माहौल बदला बदला नजर आने लगता है। गांवो के ढांचे में एक बड़ा मुद्दा जाति का भी नजर आता है। यहां एक जाति समुदाय का आदमी दूसरे जाति के स्पर्श तो क्या, उसकी छाया से भी बचता है। ऐसी सामाजिक स्थिति में घर में बंद रहना ग्रामीण परिवेश की बहुत बड़ी चुनौती है।

इस कड़वी हकीकत को सूरत से लौटे गांव के एक प्रवासी मजदूर राजित राम कहते है कि 'मैं एक मामूली मजदूर अनपढ और शूद्र हूं। हमें न तो कोइ छूता है और न

हमारे उत्थान के लिए सोचता है। हमारे विकास के लिए सरकार की बहुत सारी योजनाएं होंगी, लेकिन वह कहां आती हैं और इसका लाभ कैसे प्राप्त किया जा सकता है, यह बताने वाला कोई नहीं होता है।' एक और चीज जो बार बार मुझे घर लौटे हुए प्रवासी मजदूरों से बात करते हुए महसूस हुई कि वह आज भी सरकार से राहत के इंतजार में हैं। इसीलिए जब मैंने उनसे बात की और कहा कि आपकी समस्याओं पर कुछ लिखना चाहता हूं तो उनका कहना था लिख कर पैसा दिलवा दोगे?आधार और अकाउंट की कॉपी लाकर दूं? कौन सी योजना है?कितना पैसा मिलेगा?फार्म कहां मिल रहा है?

वास्तव में फॉर्मों, एक अदद सहायता योजना पाने के लिए लगने वाली लंबी लंबी कतारों और राहत पैकेज के बीच फंसा हमारा जरुरतमंद ग्रामीण समाज, जब इस तरह के अभाव और मजबूरियों से जूझ रहा है तो हम कैसे उम्मीद कर सकते है कि वो मास्क, सैनेटाइजर या साबुन का इस्तेमाल करता रहेगा और कैसे छोटे-छोटे घर में तीन तीन परिवारों वाला समाज अकेले कमरे में बंद होकर खुद को और देश को महामारी से बचा पायेगा?◆◆◆

चिकित्सा विज्ञान में आत्मनिर्भर भारत

... डॉ. जितेन्द्र गैरोला

कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी ने विश्व मे कुछ समय क `लिए ठहराव की अभूतपूर्व स्थिति पैदा की है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और दुनिया भर की विभिन्न सरकारों द्वारा उठाए गए प्रभावी स्वास्थ्य उपायों के बावजूद यह निरन्तर फैलता ही जा रहा है। जून 2020 के पहले सप्ताह में विश्व भर में 65 लाख से अधिक मामलों की पुष्टि की गई। शोध पत्रों में प्रकाशित रिपोर्टों की जानकारी से ज्ञात होता है कि कोविड-19 से संक्रमित रोगियों में लगभग 80 प्रतिशत मामलो में लक्षणों का पता लगाना सम्भव नहीं होता इसलिए संक्रमण का सही समय पर 'डायग्नोसिस' होना बेहद महत्वपूर्ण है तभी इस महामारी को नियंत्रित करने के उपायों का परिपालन किया जा सकता है। भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। भारत सरकार ने कोविड-19 महामारी को रोकने हेतु मजबूत और सार्थक कदम उठाए और 1.3 बिलियन आबादी को सार्वजनिक स्तर पर संक्रमण से लड़ने के लिए पहली बार 25मार्च 2020 को देशव्यापी तालाबंदी की घोषणा की थी। कोविड-19 के उपचार, रोकथाम, एवं सही डायग्नोसिस के लिए सक्रिय प्रयास किये जा रहे हैं। कोविड-19 महामारी को कम करने के लिए बहु-क्षेत्रीय नीतियां मल्टी सेक्टोरल पॉलिसीस सजग एवम् कारगर उपाय है, एवम् इन नीतियों का परिपालन आवश्यक है। भारत ने भी कुछ बहु-क्षेत्रीय मल्टी सेक्टोरल रणनीतियों को अपनाया है। जहां एक तरफ बीमारी के इलाज, रोकथाम, और डायग्नोसिस के लिए डॉक्टर, नर्सिंग ऑफिसर एवम् टेक्निकल स्टाफ की जरूरत है वहीं दूसरी तरु सामाजिक जागरूकता, सूचनाओं का पालन, सही जानकारी के जनसंचार मे पुलिस विभाग, इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी का अतुल्य योगदान है। भारत में आणविक (मॉलिक्यूलर बायोलॉजी) प्रयोगशालाओं एवं स्वदेशी कंपनियों मे तैयार कि जा रही डायग्नोसिस किट्स आत्म निर्भरता का एक जीता जागता उदाहरण है। आणविक (मॉलिक्यूलर बायोलॉजी) विज्ञान के साथ साथ अन्य प्रयोगशालाओं (लैबोरेट्रीज) जैसे भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी (एनआईवी), डिफेंस रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (डीआरडीओ), वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के सभी छोटी बड़ी लैब्स अपनी अपनी निपुणता का उपयोग कर तेजी से विकसित होने वाले तरीकों पर विशेष बल दे रहे हैं। अभी तक भारत में 900 से ज्यादा जाँच केंद्रों में कुल 61 लाख से ज्यादा नमूनों कि जाँच कराई गयी है एवम् वर्तमान में प्रतिदिन औसतन 1 से 1.5 लाख कोरोना नमूनों की जाँच की जा रही है। आईसीएमआर भारत मे नियामक प्राधिकरण के रूप मे काम कर रहा है और संक्रमण के परीक्षण के लिए दिशा-निर्देश

जारी कर चुका है। आईसीएमआर दवारा गठित राष्ट्रीय टास्क फोर्स ने कोविड-19 'डायग्नोसिस निदान' के लिए अभी तक 116 आरटी-पीसीआर किट्स को मंजूरी दी। भारत मे माय लैब्स प्राइवेट लिमिटेड ने कोविड-19 के लिए पहली स्वदेशी डायग्नोसिस किट विकसित कि एवम् आईसीएमआर से अनुमोदन व प्राधिकरण प्राप्त किया। यह कोवीड-19 डायग्नोसिस के लिए 100: संवेदनशील सेंसटीविटी है जो 2.5 घंटे मे परिणाम उजागर करती है। इंस्टीटड्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी के वैज्ञानिकों ने भारत का पहला पेपर-स्ट्रिप टैस्ट विकसित किया है। वहीं दूसरी ओर श्री चित्र तिरुनल इंस्टीट्यूट द्वारा विकसित डायग्नोसिस किट एक कम लागत वाला प्रभावी टैस्ट है।

कोविड-19 महामारी के इस दौर मे चिकित्सा क्षेत्र में वैज्ञानिक परीक्षणों की स्थिति मे बड़ी तेजी से गतिशीलता आई है। इसके अतिरिक्त भारत मे 881 मरीजों के जीनोम का अनुक्रमण (सिक्वेंसिंग) भी किया गया इस अधययन के परिणामों से देश मे दो नए आनुवंशिक वेरिएंट (जेनेटिकवैरिएंट्स) की उपस्थिति का पता लगायाइस महत्वपूर्ण जानकारी को जीन बैंक मे जमा करा दिया है। भारत की विभिन्न फंडिंग एजेन्सीस ने प्रभावी ढंग से शोधा क्षेत्र में जरूरी प्रॉजेक्ट्स को भी बजट स्वीकृत किया। संक्रमण के खतरे का पता लगाना, अनुरेखण (ट्रेसिंग), मैपिंग और स्व-मूल्यांकन हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पर आधारित 'आरोग्य सेतु ऐप' इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा विकसित किया गया है। यह एप कोरोना हॉट-स्पॉट की पहचान करने में भी कारगर है और मंत्रालय द्वारा लॉंच करने के 40-50 दिनों में ही 50 करोड़ लोगों द्वारा उपयोग मे लाई जा रही है। कोरोना संक्रमण में मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यून सिस्टम की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि इम्यून सिस्टम ठीक है तो कोरोना संक्रमण से बचा जा सकता है। इस विषय को धयान मे रखते हुए आयुष विभाग ने आयुष काढ़े के सेवन की सलाह दी जो कि लोगों द्वारा उपयोग में लाया जा रहा है।

भारत चिकित्सा विज्ञान मे विश्वगुरु बने ऐसा मूल मंत्र वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में हमेशा संचारित रहे। आत्मनिर्भरता की सफलता यहाँ पढ़ने वाले छात्रों, संसाधनों का सर्जन करने वाले वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरों के हृदय मे विद्यमान राष्ट्रीय चिंतन एवम् देश सेवा के भाव पर निर्भर करती है। देश सेवा का अभाव होना देश की प्रगति मे सबसे बड़ी बाधा है। यह देश मेरा है मुझे इसकी सेवा करनी है ऐसा मन मे विचार हो तो निश्चित रूप से भारत को वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता के सर्वोत्तम शिखर पर पहुंचाया जा सकता है।

चिकित्सा विभागों में कार्यरत चिकित्सक एवं विज्ञान के प्राध्यापकों का आपसी तालमेल एवम् एकीकृत विचार मंथन राष्ट्र को परम वैभव तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कोरोना जैसी वैश्विक संकट से निपटना है तो सरकारी अस्पतालों तथा शोधा संस्थानों में ध्यान देने की जरूरत है। स्वास्थ्य सेवाओं एवं संबंधित शोध कार्यों में जीडीपी का कुल निवेश बढ़ाना चाहिए। यदपि पिछली शताब्दी में पश्चिमी विज्ञान ने विश्व को आधुनिकता के शिखर पर पहुँचा दिया है परंतु साथ ही साथ मानवता को खतरे में भी डाल दिया है। इस कथन में कोई संदेह नहीं कि पश्चिमी विज्ञान में विश्व को सुखमय बनाने के लिए सभी जरूरतें उपलब्ध हैं परंतु आपसी प्रतिस्पर्धा में आज हर राष्ट्र आगे बढ़ने की होड़ में है जिससे वह किसी का अहित करने में भी संकोच नहीं करता है। वहीं दूसरी ओर भारतीय विज्ञान मानव कल्याण और विश्व कल्याण की बात करता है। आत्मनिर्भरता के लिए भारतीय विज्ञान को बढ़ावा देना अति आवश्यक है।

हमारे वेद आधुनिक से आधुनिक विज्ञान का स्रोत है जरूरत है तो वेदों में दिए गए सिद्धांतों को कार्यान्वित करने की। हमारी रसायन संबंधित विरासत विशाल है। रसायन विज्ञान जैसे क्षार, उत्प्रेरकों और अम्लों का वर्णन वेदों में दिया गया है। आयुर्वेद एक प्राचीनतम भारतीय चिकित्सा धरोहर है जो संचारी कम्युनिकेबल और गैर-संचारी नॉन (कम्युनिकेबल) रोगों के उपचार हेतु प्रभावशाली है। आयुर्वेदिक चिकित्सा औषधियों, धातुओं और वनस्पतियों का समावेश है। चिकित्सा विज्ञान मे आत्म निर्भरता के लिए भारतीय चिकित्सा प्रणाली के पाठ्यक्रम मे बदलाव लाने की आवश्यकता है। भारत के लिए यह न केवल कोरोना वायरस बल्कि अन्य बीमारियों के लिए स्वदेशी, कम लागत और आसानी से उपलब्ध इलाज, डायग्नोसिस निदान और रोकथाम के तरीकों को बढ़ावा देने का एक शानदार अवसर है और यह सब विज्ञान के क्षेत्र में निवेश की वृद्धि एवं वैज्ञानिक समरसता से ही संभव होगा।◆◆◆ **लेखक पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ में शोध वैज्ञानिक एवं सक्षम पंजाब के युवा प्रमुख हैं।**

हरित घर वर्तमान की आवश्यकता

... दिवाकर अवस्थी

भूर्जज्ञ ऊत्तनपदों- ऋग्वेद की एक ऋचा जो कि तैत्तरीय संहिता में वर्णित है के अनुसार हमारी पृथ्वी वृक्ष से उत्पन्न हुई है। यही आधार हमें अपनी जननी के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित करता है।

आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, लुप्त होती प्रजातियों व प्राकृतिक असंतुलन जैसी गम्भीर समस्याओं से जूझ रहा है। ये सारी समस्याएं आपस में जुड़ी हुई हैं और पर्यावरण से अनावश्यक छेड़-छाड़ के कारण उपजी हैं। बेतरतीब औद्योगिकरण व शहरीकरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन तथा जीवाश्म ईंधन की बढ़ती हुई खपत के कारण पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हुई है। मानव व जीव-जन्तुओं के अस्तित्व हेतु वृक्षों की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, इसी बात से प्रेरित होकर हमारे ऋषि मुनियों व पूर्वजों ने वनों के संरक्षण व संवर्द्धन को धार्मिक संस्थाओं व व्यवहारों से आबद्ध किया है। समाज में कई वृक्षों जैसे कि बरगद, पीपल, तुलसी, आंवला, आम आदि की पूजा की जाती है तथा कई औषधीय पौधों को पूजा पद्धति में शामिल किया जाता है। जेओफ्री डोनोवन नामक वैज्ञानिक ने एक शोध में यह बताया कि किसी विशेष क्षेत्र में वृक्षों के काटने से होने वाली मृत्यु एवं लोगों के मृत्यु के बीच तुलनात्मक रूप से किये गये अध्ययन का परिणाम चौकाने वाला था। जिस क्षेत्र में पेढ़ों की अंधा-धुंध कटाई हो रही थी, उस क्षेत्र में हृदयघात एवं श्वास रोग सम्बन्धी समस्याओं से होने वाली मृत्यु-दर अधिक पाई गई। यह भी ज्ञात हुआ कि जिन क्षेत्रों में घने वन थे, उन क्षेत्रों में क्राइम रेट कम था।

हम जहां रहते हैं यदि उस प्रांगण को हरा-भरा कर दें, वातावरण को स्वच्छ व निरोगी रखें, जल संचय करें, रसोई व कपड़े धोने के जल से फ्लश के पानी अथवा किचन गार्डन में पानी की का पुनरुपयोग करें, ऊर्जा बचाएं, वस्तुओं का तथा जल का पुनर्चक्रण करें, घरेलू अपशिष्ट से कम्पोस्ट का निर्माण करें, सौर ऊर्जा का बेहतर प्रयोग करें तथा प्लास्टिक को त्याग कर बांस, कागज, मिट्टी, सन, पटसन, सूत आदि का प्रयोग बहुतायत में अपने घर में करें तो वह हरित घर बन जाएगा। इंडिया वाटर पोर्टल के अनुसार मेरियम वेबेस्टर की इको फ्रेंडली हाउस की संकल्पना भी हरित घर संकल्पना को प्रोत्साहित करता है इसके अनुसार पर्यावरण अनुकूल घरों का निर्माण करना जिसमें न्यून कार्बन उत्सर्जन को बढ़ावा मिलता हो। इसका प्रथम ज्ञात उपयोग सन 1989 में हुआ। ऐसे घरों में पवन ऊर्जा का प्रयोग ईंधन हेतु बायो गैस का प्रयोग, उच्च दक्षता की प्रकाश व्यवस्था, ऐसी छतों का निर्माण जहां से दिन मे प्रकाश अधिक आए। ऐसे घरों का निर्माण कर्नाटक व केरल में शुरू किया जा चुका है। एक और नवीन कॉन्सेप्ट हरित छत संकल्पना भी हरित घर में शामिल की जा सकती है-1960 के दशक में जर्मनी से प्रारम्भ हुआ यह आंदोलन आज यूरोप व अमेरिका में अपनी सक्रिय भूमिका में है और विभिन्न इमारतों की छतों में इसका प्रयोग कर 6,50,000 वर्गमीटर क्षेत्र को कव्हर करके तापमान नियंत्रण पर सफलता पाई गयी है। भारत में प्रथम हरित छत सम्मेलन का आयोजन 2011 में इंदौर मप्र में वर्ल्ड ग्रीन इन्फ्रास्ट्रक्चर नेटवर्क व ग्रीन टेक्नोलोजी नामक संस्था के तत्वावधान में आयोजित हुआ जिसमें टेरेस गार्डन व छतों में हरियाली के माध्यम से ताप नियंत्रण व वातावरण को शुद्ध रखने के उपाय पर चर्चा की गयी तथा एतदर्थ उपाय सुझाए गए। इसी प्रकार इस क्षेत्र में होने वाले प्रयासों को आपस में साझा करने से प्रेरणा व युक्ति की प्राप्ति होगी, उदाहरण स्वरूप वृक्षों के संरक्षण को लेकर भारत में सुन्दरलाल बहुगुणा का बहु चर्चित चिपको आंदोलन हुआ था। बिहार के भागलपुर जिले के ग्राम धरहरा के ग्रामीणों में बेटियों के जन्म के साथ ही दस पौधों लगाने व पौधों के जन्मदिन मनाने की सुंदर परंपराएं हैं। Indian state of forest report 2018 के अनुसार भारत में 24.4 क्षेत्रफल पर वन हैं। राष्ट्रीय वन-नीति के अनुसार देश के 33.3: भू-भाग पर वन होने चाहिए।

यह वैषम्य हर हालत में पूरा और सही होना चाहिए। भारत में मानसून एक वरदान है यह ऐसा समय है जब पौधा रोपण बेहतर तरीके से होता है इस समय रोपे गये पौधों की जीते रहने की दर अधिक होती है। हमें हरित घर की संकल्पना को साकार करने के लिये आगे आकर घरों में न केवल पौधारोपण करना चाहिए वरन् इसे बढ़ावा देने के लिए आस पड़ोस में प्रेरित भी करना चाहिए यदि हम 'हरियाली से खुशहाली' पाना चाहते हैं तो प्रकृति ने जितना हमें हमारे हिस्से का दिया है उसे अपने जीते जी वापस कर जाएं तभी हम आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ छोड़ जाएंगे अन्यथा आने वाली पीढ़ी हमें सिर्फ उपभोग कर्ता के रूप में याद करेगी प्रदाता के रूप नहीं।◆◆◆

अपने पांव पर मजबूती से खड़ा है विश्व का सबसे बड़ा संगठन

... नरेन्द्र सहगल

समस्त संसार में भारतवर्ष ही एकमात्र ऐसा सनातन राष्ट्र है जिसमें गुरु शिष्य की महान एवं अतुलनीय परम्परा को जन्म दिया है। शिक्षण संस्थाओं में छात्रों को पढ़ाने वाले अध्यापक, प्राध्यापक, शिक्षक, व्यापार जगत में ट्रेनिंग देने वाले उस्ताद, मास्टर और राजनीतिक क्षेत्र में अपना प्रभाव जमाने वाले तथाकथित महान नेता विश्व के प्रत्येक कोने में पाए जाते हैं परन्तु मनुष्य को सम्पूर्ण ज्ञान देकर उसे किसी विशेष ध्येय के लिए समर्पित हो जाने की प्रेरणा देने वाले श्रीगुरु केवल भारत की धरती पर ही अवतरित होते हैं। इन्हीं श्रीगुरुओं के तपोबल को शिरोधार्य करके हमारे देश के असंख्य, संतों, महात्माओं, योद्धाओं, स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत के भूगोल, संस्कृति, धर्म और राष्ट्र जीवन के मूल्यों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व झोंक दिया। ऐसी मान्यता है कि इस गुरु परम्परा में आद्य श्रीगुरु महर्षि व्यास थे। इसीलिए भारत में व्यास पूजा के उत्सव का श्रीगणेश हुआ। इस दिन विशाल हिन्दू समाज (जैन, सिख, सनातनी, आर्य समाजी, शैव, वैष्णव, लिंगायत, बौद्ध इत्यादि) के अधिकांश हिन्दू लोग गुरु-पूजन की परम्परा को आस्था और श्रद्धा के साथ निभाते हैं। गुरु एवं गुरुकुल भारतवर्ष के समग्र राष्ट्र जीवन के उद्गम स्थल और रक्षक रहे हैं।

भारतवर्ष के सम्पूर्ण राष्ट्र जीवन के प्रतीक, भगवान भास्कर के उदय की प्रथम रणभेरी, भारतीय संस्कृति की पूर्ण पहचान और भारत के वैभवकाल से लेकर आजतक के कृमिक इतिहास के प्रत्यक्षदर्शी परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु मानकर राष्ट्र के पुनरूत्थान में कार्यरत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक देश और विदेश में 'भगवा जागरण' के लिए कटिबद्ध है भारतवर्ष पुन: जगदगुरु के सिंहासन पर विराजमान हो इस हेतु कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ते जा रहे हम स्वयंसेवक किसी की सहायता, अनुदान, आर्थिक सहारे और प्रमाण पत्र पर आश्रित नहीं हैं। सम्भवत: संघ ही विश्व का एकमात्र ऐसा विशाल संगठन है जो विचारधारा (हिन्दुत्व), उद्देश्य (परम वैभव), कार्यपद्धति (नियमित शाखा) और पवित्र साधनों (श्रीगुरु दक्षिणा) के साथ अपने स्वयं के मजबूत आधार पर खड़ा है।

बगदादी जैसे दुर्दांत दहशत गर्द समझते हैं कि दुनियाभर से सज्जन लोगों को समाप्त करके जो बचेगा, वही उनके लिए खुदा की नियामत होगी। दहशत गर्दी के रास्ते से 'निजाम-ए-मुस्तफा' की हुकूमत की स्थापना करना। अर्थात् खुदा के बंदों का साम्राज्य खड़ा करना, ये मार्ग भी अख्तयार किया जा रहा है। इसके खतरे से संसार कांप उठा है। विश्व में तलवार के जोर पर कत्लोगारत करके सज्जन लोगों को एक ही मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करने का रास्ता है यह। जाहिर है इस रास्ते में विवेक नाम की कोई चीज नहीं है, मानवता भी कहीं नजर नहीं आती। इसी तरह एक और मानव समुदाय ने भी सेवा की आढ़ में दुनिया भर में जिस साम्राज्य की स्थापना की थी उसने कई मानवीय सभ्यताओं को समाप्त कर दिया। गरीबी और गुरबत के मारे लोगों को सेवा के झांसे में फंसाकर अपने मजहब से शिकंजे में लेकर उनके मूल धर्म, समाज और राष्ट्र का दुश्मन बना देना इनके मोक्ष का मार्ग बन गया। हमारे देश भारत के लोगों (हिन्दुओं) के गौरवशाली इतिहास को बिगाड़ने में कुछ हद तक सफल रहे इन लोगों ने हमारे राष्ट्रीय धार्मिक अस्तित्व को समाप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। परिणाम स्वरूप आज हमारे देश में काले अंग्रेजों का बोलबाला है। एक तीसरे वर्ग ने भी मजदूरों और किसानों के नाम पर पूरे विश्व पर अपना परचम लहराने की कोशिश की थी। लाल सलाम की भावुकता के साथ दुनिया के मजदूरों को एक हो जाने का आह्वान किया था। 'पूंजीवाद का सर्वनाश और 'मेहनतकशों का राज इन दो ध्येय वाक्यों के साथ ये लोग प्रारम्भ में तो बहुत शीघ्र ही सफलता की सीढ़ियां चढ़ गए। 70 से भी ज्यादा देशों में छा जाने में कामयाब हो गए। परन्तु जिस गति के साथ ये लोग आगे बढ़े थे उससे कहीं ज्यादा गति के साथ इनके ताश के सभी महल गिर गए। कारण स्पष्ट है यहां भी विवेक और मानवता नहीं थे। ये लोग तो धर्म, संस्कृति और राष्ट्रवाद के ही शत्रु साबित हुए। इनके लिए आत्मा परमात्मा की अवधारणा अफीम जैसे थी और है। इन्होंने भी मानवता का खून बहाने में कोई परहेज नहीं किया। चौथी श्रेणी है भगवा रंग वालों की। ब्रह्माण्ड की उत्पति के साथ ही यह रंग अस्तित्व में आ गया था।

सूर्य की पहली किरण ने इसी रंग का आवरण ओढ़ा था। तब से लेकर आज तक इस भगवा रंग के ध्वज वाहकों ने विवेक, मानवता, सेवा, समपर्ण का मार्ग नहीं छोड़ा। वैराग्य और बलिदान के करोड़ों उदाहरणों को अपने में समेटे हुए इस रंग के अनुयायियों ने कभी भी किसी पराए देश पर आक्रमण नहीं किया। पूजा का अर्थ है समर्पण की भावना को प्रकट करना। अभावों में भी श्रद्धाभाव के साथ, कष्ट उठाते हुए भी, निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर जो भी दिया जाता है, वही सच्चा समर्पण है। इसी को श्रीगुरु दक्षिणा कहते हैं। संघ की मान्यता है कि आत्मत्याग, आत्मयज्ञ और आत्म बलिदान के द्वारा ही भगवा जागरण (सांस्कृतिक राष्ट्रवाद) की लौ प्रज्ज्वलित होगी। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, जगदगुरु शंकराचार्य, समर्थ गुरु रामदास, श्री गुरु नानकदेव, तुलसीदास, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ और महर्षि अरविंद जैसे हजारों संत महात्माओं ने भगवा ध्वज की लौ को प्रज्जवलित रखने के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया था। हम स्वयंसेवक भी भगवा ध्वज के सामने अपना अधिक समय और धन देने की प्रतिज्ञा के साथ श्रीगुरु दक्षिणा करते हैं। ◆◆◆ **लेखक स्तंभकार एवं पत्रकार हैं।**

कला-साधना मानवोपयोगी है

... चेतन कौशल

जीना भी एक कला है। जो व्यक्ति भली प्रकार जीना सीख जाता है, वह मानो उसके लिए सोने पर सुहागा। भली प्रकार जीने के लिए व्यक्ति का अजीवन किसी न किसी कला के साथ जुड़ा रहना अति आवश्यक है भी। मनष्य को मांस-मदिरा और धुम्रपान से सदैव दूर रहना चाहिए। सनातन धर्म इन्हें सेवन करने की किसी को आज्ञा नहीं देता है अपितु सावधान करता है। जिंदगी से कला जोड़ो, नशा नहीं। कला से प्रेम करो, नशे से नहीं। नशे का त्याग करो, जिंदगी का नहीं। नशे से नाता तोड़ो, जिंदगी से नहीं। कला प्रेम से जिंदगी संवरती है, नशे से नहीं। अत: कला प्रेमी को नशा नहीं करना चाहिए।

मानव शरीर उस मशीन के समान है जिसमें पांच कर्मेंद्रियां, पांच ज्ञानेंद्रियां, मैं का भाव, मन और बुद्धि होती है। मुंह, उपस्थ, गुदा, हाथ और पैर उसकी कर्मेंद्रियां कर्म करती हैं जबकि जिह्वा, आंखें, नाक, कान और त्वचा ज्ञानेंद्रियां उसके लिए ज्ञानार्जित करती हैं। यह सब कार्य एक इंटरनैट की तरह मात्र बुद्धि के नियंत्रण में होते हैं। प्राचीनकाल से ही भारत की गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित सर्वश्रेष्ठ विश्वसनीय वैदिक शिक्षा-प्रणाली कला-सृजन करने वाली अंग्रेजी साम्राज्य तक प्रभावी रही थी। इतिहास में श्रीकृष्ण-बलराम जी के गुरु संदीपनी, श्रीराम-लक्ष्मण जी के गुरु विश्वामित्र, लव-कश के गुरु वाल्मीकि के आश्रम जैसे अनेकों आश्रमों का उल्लेख मिलता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वोट बैंक और दलगत राजनीति के कारण इसे भारी हानि पहुंची है। गुरुओं में पहला गुरु माता, दूसरा पिता और तीसरा विद्यालय के गुरु एवं अध्यापक माने जाते हैं। जीवन निर्माण में इनकी महान भूमिका रहती है। मां-बाप तो मात्र बच्चे को जन्म देते हैं जबकि जीवन में उसे गुरु ही योग्य पात्र बनाते हैं। मां के गर्भ में विकसित हो रहा शिशु जन्म लेने से पूर्व अपने कानों से दूसरों की बातें श्रवण करना आरम्भ कर देता है। महाभारत के पात्र वीर अभिमन्यु इसका जीता-जागता उदाहरण है। उन्होंने जन्म लेने से पूर्व ही अपने पिता अर्जुन से सुनाई गई गाथा से, माता सुभद्रा के माध्यम से चक्रव्यूह बेधने की कला सीख ली थी और उससे महाभारत में द्रोणाचार्य द्वारा रचाया गया चक्रव्यूह भी बेधा डाला था। मां के द्वारा प्रसंग पूरा न सुन पाने के कारण वे चक्रव्यूह से बाहर निकलना नहीं जान सके थे, उनकी मां गाथा सुनते- सुनते बीच में सो गई थी। अत: वे वीरगति को प्राप्त हुए थे। इसलिए कहा जाता है कि किसी भी गर्भवती महिला को ज्ञानरस, वीररस की गाथाएं सुनाने के साथ-साथ उससे धार्मिक और सदाचार की ही बातें करनी चाहिए। उसके शयन-कक्ष में धार्मिक एवं संत महान पुरुषों के चित्र लगाने चाहिए। इससे अच्छा और संस्कारवान् बच्चा पैदा होता है। जन्म लेने के पश्चात् बच्चा धीरे-धीरे अपने गुरु माता-पिता से खाना-पीना, बोलना, खड़े होना, चलना, दौड़ना सब कुछ सीख लेता है। ज्यों-ज्यों बच्चा बड़ा होता जाता है त्यों-त्यों वह बालक या बालिका के रूप में तीन-चार वर्ष की आयु में पाठशाला जाना आरम्भ कर देता है। वहां वह लिखना-पढ़ना, बोलना, संवाद करना, नाचना, गाना इत्यादि अन्य कलाएं सीखता है। यही नहीं परंपरागत गुरुकुलों में तो आत्म रक्षा हेतु छात्र-छात्राओं को युद्धकला भी सिखाई जाती थी। कोई भी कला साधना आत्म साक्षात्कार करने का संसाधन है, साध्य नहीं। वही कला तब तक जीवित रहती है, जब तक उसका किसी व्यक्ति के द्वारा एकलव्य की तरह सृजन, पोषण और अभ्यास किया जाता है। वही व्यक्ति कला का सफलता पूर्वक सृजन, पोषण और अभ्यास कर सकता है जिसके पास किसी कला के प्रति आत्म समर्पण की भावना, धैर्य एकाग्रता, और आत्मविश्वास होता है। जीवन में सफलता की ऊंचाइयां छूने और कला में प्रवीणता पाने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति का होना अति आवश्यक है। कलात्मक शिक्षण-प्रशिक्षण लेने से योग्यता में निखार आता है। कलात्मक अभिनय करने से दूसरों को ज्ञान मिलता है।

कलात्मक प्रतियोगिताओं में भाग लेने से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है। लोकहित में कलात्मक व्यवसायिक परिवेश बनाने से भोग, सुख और यश प्राप्त होता है। कला-संस्कृति से ही किसी व्यक्ति, परिवार, समाज, क्षेत्र, प्रांत और देश की पहचान बनती है। कला-संस्कृति को जीवित रखने का मात्र एक सरल उपाय यह है कि गुरु की उपस्थिति में प्रशिक्षित प्रशिक्षु के द्वारा नये

प्रशिक्षु को शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जाए। उनके द्वारा समय-समय पर अभ्यास हो और निश्चित स्थान पर उनकी कला-प्रदर्शन का आयोजन भी किया जाए। किसी कला का सम्मान कला प्रेमी ही करते हैं, कोई बाजार नहीं। कला का सम्मान करने से ही किसी कलाकार का वास्तविक सम्मान होता है। जिस स्थान पर कला का सम्मान न हो, वहां आयोजक को भूलकर भी किसी कलाकार से उसकी कला का प्रदर्शन नहीं करवाना चाहिए और न ही कलाकार को उसमें भाग लेना चाहिए। कला प्रेमियों के हृदय में कहीं न कहीं कला के प्रति सम्मान अवश्य होता है जिस कारण वे उससे संबंधित कला मंच की ओर आकर्षित होते हैं। किसी भी कला को जीवंत बनाए रखने के लिए दर्शकों, कला प्रेमियों को उस कला का सम्मान अवश्य करना चाहिए।

समय-समय पर नालंदा, तक्षशिला विश्वविद्यालयों और उनकी शाखाओं एवं उप शाखाओं की तरह वर्तमान सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं द्वारा अपने विभिन्न कलाकार छात्र-छात्राओं का उत्साह बढ़ाने के लिए उससे संबंधित कला मंचों का आयोजन करवा कर, उन्हें सम्मानित भी करना चाहिए। जो युवाजन अपने जीवन में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक शक्तियों का विकास करना चाहते हैं, उन्हें स्वयं में छिपी हुई किसी न किसी कला (वादक-यंत्र, वादन, नृत्य, संगीत, अभिनय, भाषण, साहित्य लेखन जैसी अन्य किसी भी कला) से प्रेम अवश्य करना चाहिए। जीवन निर्वहन करने के साथ-साथ उनके पास अपना मानव जीवन संवारने के लिए इससे बढ़िया अन्य और संसाधन क्या हो सकता है! ◆◆◆

लेखक 'नूरपुरी' सुल्याली कांगड़ा हि0प्र0

With best compliments from:

R. D. GASES

Pvt. Ltd.

Plot No. 12, Phase-1, Industrial Area,
Sauli Khad, Mandi Himachal Pradesh
Contact: 98160-30033

यही तो है टी वी चैनल्स की 'गिद्ध पत्रकारिता'?

... निर्मल रानी

सॉलिसिटर जनरल की बात कभी-कभी देश के मुख्य धारा के टी वी चैनल्स पर तो हू बहू लागू होती है। जिसका ताजा उदाहरण पिछले दिनों अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की दु:खद कथित आत्म हत्या के बाद देश के सबसे तेज व सबसे अधिक प्रसारण का दावा करने वाले टी वी चैनल्स की रिपोर्टिंग के दौरान देखा गया। 34 वर्षीय अभिनेता सुशांत भारतीय टीवी व फिल्म जगत का एक उभरता हुआ हर दिल अजीज अभिनेता था। युवा पीढ़ी के लोग उससे प्यार करते थे। निश्चित रूप से उसकी दुखद मौत की चर्चा टी वी चैनल्स व मीडिया के सभी अंगों में होनी चाहिए। परन्तु उस समाचार या चर्चा को भी ग्लैमर के अंदाज में पेश करना, आत्महत्या के समाचार को मनोरंजन में बदलने की कोशिश करना, प्रस्तुतीकरण में बैकग्राउंड में उसके गाने चलाना, भोंडे व बेतुके शीर्षक देकर उसे याद करना, बिना किसी संदेह या विवेचना के उसकी आत्म हत्या के पहलू तलाश करना यहाँ तक कि ऐसे पहलुओं की ओर इशारा करना जो मरणोपरांत उसकी बदनामी का सबब बन रहे हों, निश्चित रूप से मीडिया के यही वह रंग ढंग व रवैये हैं जिन्हें देखकर कभी कभी सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की मीडिया की गिद्ध से तुलना किये जाने वाली बात सही प्रतीत होने लगती है। इतना ही नहीं बल्कि ऐसे विषयों के प्रसारण के टी वी एंकर्स के हंगामा पूर्ण अंदाज से यह भी लगने लगता है कि यह पत्रकार नहीं बल्कि यही हैं 'कयामत के पैगंबर' जो युवा अभिनेता की आत्महत्या जैसी दुखद घटना में भी 'नकारात्मकता' या मनोरंजन का पहलू ढूंढने व उसे प्रस्तुत करने से बाज नहीं आते। भारतीय प्रेस परिषद की गाइडलाइंस के विपरीत मुख्यधारा के टीवी चैनल्स ऐसी आत्म हत्याओं में सनसनी का पहलु तलाश कर ही लेते हैं।

मिसाल के तौर पर पिछले दिनों अभिनेता सुशांत की आत्महत्या के बाद जोरदार म्यूजिक के धमाके साथ टी वी स्क्रीन पर आने वाले 'धमाकेदार' शीर्षकों पर ही नजर डालिये-'भावनात्मक इम्युनिटी कमजोर','ऐसे कैसे हिट विकेट हो गए सुशांत', पटना का सुशांत मुंबई में फेल क्यों, 'स्क्रीन पर रोल मॉडल असल जिंदगी में कमजोर ', और 'अपने बेड रूम में हरे रंग के कपड़े से बनाया फन्दा' आदि इस तरह के बेहूदे व मसालेदार शीर्षक के साथ गला फाड़कर इस अभिनेता की दु:खद आत्म हत्या के समाचार की विवेचना पेश की गयी। परन्तु यही मुख्यधारा का पेशेवर व्यावसायिक मीडिया देश के गरीब मेहनत कश लोगों द्वारा मजबूरी वश की जाने वाली आत्म हत्याओं की खबरें प्रसारित करने से परहेज करता रहा। जबकि लॉक डाउन में श्रमिकों द्वारा अपने अपने घर गांव की वापसी के दौरान ही सैकड़ों लोगों द्वारा भूख,बदहाली, मजबूरी व अवसाद ग्रस्त होने के चलते आत्म हत्याएँ की गयीं। अभी पिछले ही दिनों एक बाप ने सिर्फ इसलिए आत्म हत्या कर डाली क्योंकि वह अपने बच्चे का भूख से तड़पना बर्दाश्त नहीं कर का। वह गरीब बेरोजगार था इसी भारत माता का लाल था। परन्तु चूंकि यह खबर सत्ता को भी नागवार गुजरेगी और मृतक सुशांत सिंह राजपूत की तरह कोई सेलिब्रिटी नहीं बल्कि मजदूर वर्ग का व्यक्ति है इसलिए टी आर पी के बढ़ने संभावना भी बिलकुल नहीं।

लिहाजा ऐसा समाचार इस 'गिद्ध नुमा' मीडिया की प्राथमिकताओं में हरगिज नहीं आते। पिछले दिनों दिल्ली के एक भारतीय राजस्व अधिकारी द्वारा आत्म हत्या की गयी। उसकी आत्महत्या सत्ता व शासन से जुड़ा विषय थी परन्तु इस पर भी मीडिया खामोश रहा। आज देश में ऐसी अनेक आत्म हत्याएँ लगभग रोजाना हो रही हैं। परन्तु आए दिन फांसी के फंदे पर झूलने वाला चूँकि मजदूर किसान, कामगार, व्यवसायी या मध्यम वर्गीय व्यक्ति है और उसकी मौत चूँकि सत्ता प्रतिष्ठानों पर सवाल खड़ा करेंगी इसलिए इधर देखने व चर्चा करने की जरूरत ही नहीं। और जब बात किसी सेलेब्रिटी की आत्म हत्या की हो तो यही टी वी चैनल्स 'गिद्ध पत्रकारिता' का पर्याय बन जाते हैं। ◆◆◆

आत्मनिर्भर भारत-गांव लौटे युवा मिटी के ओवन में पिज्जा बनाकर बेच रहे फाइव स्टार होटल में करते थे काम, कोरोना महामारी के कारण गांव वापिस लौटे थे। प्रतिदिन लगभग 150 पिज्जा बेच रहे, कर रहे अच्छी कमाई।

परेशानियों को अवसर बनाकर जीवन में आगे बढ़े, वही सफलता प्राप्त करता है। उसे ही स्कल इंसान कहते हैं। विदेशों में फाइव स्टार होटलों में काम कर चुके और कोरोना महामारी के कारण वापिस लौटे युवक पर यह उक्ति सटीक बैठती है। लॉकडाउन के कारण विदेश से घर लौटे हिमाचल प्रदेश, हमीरपुर जिला के सनाही निवासी विपिन कुमार व चचेरे भाई ललित ने घर के पास ही मिटी का ओवन बनाकर पिज्जा बेचना शुरू किया और आज प्रतिदिन 125 से 150 पिज्जा बनाकर बेच कर हर दिन अच्छी कमाई कर रहे हैं।

लॉकडाउन के कारण विदेश से घर लौटे हमीरपुर जिले के सनाही निवासी विपिन कुमार ने कमाई का साधान खोजना शुरू किया। इसमें अपने चचेरे भाई को भी साथ लिया। फिर दोनों ने घर के पास ही मिट्टी का ओवन बनाकर पिज्जा बेचना शुरू किया। करीब 20 दिन पहले शुरू किया यह कारोबार बढ़ रहा है और दोनों भाई अब प्रतिदिन 125 से 150 के बीच पिज्जा बनाकर बेच रहे हैं। कोरोना वायरस के कारण दुनिया के कई देशों में जिंदगी ठहर सी गई। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा, लेकिन अपने घर और अपनी माटी से किसे लगाव नहीं होता है। यही सोचकर ब्रिटिश आइलैंड से हमीरपुर के सनाही का युवा विपिन घर लौट आया। मार्च के पहले हफ्ते घर पहुंच गया। इसी दौरान विपिन का चचेरा भाई ललित भी घर लौट आया। ललित अमृतसर के बाघा बार्डर स्थित होटल में चीफ एग्जीक्यूटिव शेफ के तौर पर कार्य करता था, जबकि विपिन विदेश में होटल में बतौर मैनेजर सेवाएं देता था। विपिन और ललित ने बताया कि घर लौटने के बाद कुछ दिनों तक तो कर्फ्यू के कारण घर से निकलना ही कम हुआ। परिवार में पहुंचने का सुकून था, लेकिन ज्यों-ज्यों लॉकडाउन बढ़ता गया तो रोजगार की चिंता भी सताने लगी। अनलॉक-1 के बाद कुछ काम धंधा करने का मन बनाया, लेकिन एकदम इतना अधिक निवेश करना भी संभव नहीं था। इसलिए कुछ ऐसा करने की ठानी जिसमें लागत भी कम हो, गांव के आसपास उत्पाद मिलता भी न हो और सबसे महत्वपूर्ण यह था कि किसी का रोजगार भी प्रभावित न हो। आपस में बातचीत कर मिट्टी के ओवन से तैयार पिज्जा (वुड फायर पिज्जा) तैयार करने पर सहमति बन गई। गांव के पास ही एक दुकान देखी। दोनों ने इसे किराये पर ले लिया। वुड फायर पिज्जा तैयार करने के लिए मिट्टी के ओवन की जरूरत थी तो इसे स्वयं ही तैयार किया। पिज्जा बनाने के लिए अधिकतर सामग्री भी घर पर ही तैयार की जाती है। गांव में ही तैयार पनीर और सब्जियां प्रयोग में लाई जा रही हैं। विपिन और ललित बताते हैं कि गांव में वुड नायर पिज्जा की डिमांड बढ़ रही है। शुरुआत में प्रतिदिन 10 से 15 पिज्जा बेच रहे थे, लेकिन अब प्रतिदिन 125 से 150 पिज्जा बनाकर बेच रहे हैं। ◆◆◆

!! राष्ट्रवादी शक्तियों की अभूतपर्व महााविजय पर कोटि-कोटि शुभकामनाएँ !!

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED CO.

JAS-ANZ

MS3408121N

SSI

महावीर प्रसाद मित्तल

Mob. : 9312243431, 9212243431

® 2133418

MPi देवभूमि

सेब की पेटियों के निर्माता

(हिमाचल) सुरेश परमार (M) 7018415620, 8894904578, 94592326598

(कालका) मयंक मित्तल 9654276288

(कालका) अवधेश मित्तल 8510010941

(दिल्ली) राजीव गुप्ता 9650513642

महावीर पैकेजिंग इन्डस्ट्रीज

e-mail : mpackg@gmail.com • facebook.com/mahavirpackaging

visit us : www.mahavirpackagingindustry.com

बालों की कहानी

बाल बालों की कहानी केवल मानव शरीर पर ही नहीं, दूसरे स्तन-धारियों पर भी होते हैं। मानव शरीर पर बंदर से ज्यादा बाल हैं लेकिन बहुत छोटे और बारीक। इनका पैदा होना हारमोन की मात्रा पर निर्भर करता है। नर के शरीर पर मादा से ज्यादा बाल होते हैं। अलग-अलग भागों के बालों की लंबाई अलग-अलग होती है। सिर के बाल 150 सेंटीमीटर तक बढ़ सकते हैं। ये 2-7 सेंमी. प्रति सप्ताह की दर से वृद्धि करते हैं। प्रतिदिन 70-80 बालों का झड़ना स्वाभाविक है।

बालों का जन्म चमड़ी के 'हेयर-फोलिकल' से होता है। बाल काले या भूरे हो सकते हैं। इनमें एक वर्णक होता है जिसे 'मैलेनिन' कहते हैं। बालों को खड़ा करने के लिए-'इरैक्टर पिल्ली' होते हैं जो डर या हैरानी में बालों को खड़ा कर देते हैं। बालों के पास एक सिबेशियस-ग्रंथि होती है जो बालों की जड़ों को नियमित तेल देती रहती है। पलकों के बाल आंखों की सुरक्षा करते हैं। इनको भी एक ग्रंथि तैलीय रखती है। दाढ़ी के बाल 6.2 मि. मी. मीटर और सिर के बाल 0.005 मि. मी. घने होते हैं। डर की अवस्था में एडरीनेलिन हारमोन के कारण यह खड़े हो जाते हैं। सिर के बाल एक साल में दो-बार टूट कर दोबारा अंकुरित हो जाते हैं। गंजापन एक प्राकृतिक एवं जीन द्वारा नियंत्रित क्रिया है जो केवल पुरूषों में होती है। स्त्रियां गंजी नहीं होतीं। बाल शरीर को गर्मी एवं सुन्दरता प्रदान करते हैं। स्त्रियों में बालों को संवारना-सजाना एक स्वाभाविक क्रिया है। बालों को केश या जुल्फ भी कहते हैं। इतिहास में वर्णित है कि द्रौपदी के पांच फुट लम्बे बाल थे। चोटी रखना एक पुराना रिवाज है। गुरूकुल शिक्षा के दौरान विद्यार्थी बालों में चोटी रखा करते थे। अब हिंदुओं में कहीं-कहीं चोटी देखने में मिल जाती है। आजकल नाई की दुकान पर या ब्यूटी पार्लर में बाल काट कर फेंकते नहीं। इनको बेचा जाता है और कई प्रकार का कीमती सामान बनता है। शरीर पर करोड़ों बाल होते हैं। इनको इकठ्ठा कर के जलाना नहीं चाहिए। इनसे बहुत सी हानिकारक गैसें बनती हैं जिनसे प्रदूषण फैलता है। बालों द्वारा खाद बनाई जा सकती है। जलाने से वातावरण में प्रदूषण हो सकता है। इनसे जो जहरीली गैसें निकलती हैं वे मानव मस्तिष्क एवं फेफड़ों पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। हमारे बाल प्रकृति की एक अनुपम भेंट हैं। इनका पालन पोषण ठीक से करें तो ये आपकी सुन्दरता को चार चांद लगा देंगे। बाल धूप में सफेद नहीं होते। उम्र के साथ सफेद बाल भी अपना ही महत्त्व रखते हैं। चांदीनुमा बाल बड़प्पन की निशानी हैं। सच है बाल करें कमाल। इनकी सुरक्षा से सुंदरता बढ़ जाती है।◆◆◆

... विजेन्द्र कोहली गुरदासपुरी

卐

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

प्रश्नोत्तरी

1. भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में कब मान्यता प्राप्त हुई?
2. 'तुलसीदास' किस काल के कवि हैं?
3. 'कामायनी' किसकी रचना है?
4. 'क्ष' कौन-से दो व्यंजनों के मेल से बना है?
5. अग्नि का पर्यायवाची शब्द है?
6. कौन-सा शब्द शुद्ध लिखा गया है?
7. शब्द का शुद्ध रूप पहचानिए
8. महा ऋषि में संधि होने पर बनेगा
9. उपकार का विलोम है
10. देवनागरी लिपि किस भाषा की लिपि है?
11. 'सच्चरित्र' का संधि-विच्छेद होगा?
12. 'न रहेगा बांस न बजेबी बांसुरी' का अर्थ है?
13. 'आज्ञापान करने वाले' को कहते हैं?
14. 'मुठ्ठी गरम करना' का अर्थ है?
15. 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' कहां है?

उत्तर:. 1. जयशंकर प्रसाद, 2. क् व ष, 3. हुताशन, 4. अतिथि, 5. बीमारी, 6. महर्षि, 7. प्रतिकार, 8. महर्षि, हिंदी, 9. अपकार, 10. हिंदी, 11. सत् चरित्र, 12. झगड़े को जड़ से नष्ट कर देना, 13. आज्ञाकारी, 14. कुछ देना, 15. नई दिल्ली,

पहेलियां

1. ऐसी क्या चीज है जिसे आप दिन भर उठाते और रखते हैं इसके बिना आप कहीं जा नहीं सकते।
2. ऐसी क्या चीज है जो जून में होती है दिसंबर में नहीं आग में होती है लेकिन पानी में नहीं।
3. हरी थी मन भरी थी लाख मोती जड़ी थी, राजाजी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी
4. काली हूं पर कोयल नहीं, लंबी हूं पर डंडी नहीं डोर नहीं पर बांधी जाती, मैया मेरा नाम बताती।
5. ऐसी क्या चीज है जो आंखों के सामने आने से आंखें बंद हो जाती है।
6. हाथ आए तो सौ सौ काटे, जब थके तो पत्थर चाटे।
7. एक माता के 2 पुत्र, दोनों महान अलग प्रत भाई भाई से अलग, एक ठंडा दूसरा आग
8. ऐसी क्या चीज है जिसे बनाने में कफी वद्र लगता है लेकिन टूटने में एक क्षण भी नहीं लगता

उत्तर : कदम, गर्मी, भुट्टा, चोटी, रोशनी, चाकू, चंद्रमा, भरोसा

चुटकुले

1. कोरोना के बारे में कोई जानकारी चाहिए तो मुझसे पूछो।
पूरी की पूरी, कॉलर ट्यून, रट ली है मैंने..!!
बस एक बार ये 'कोरोना वायरस' खत्म हो जाये।
फिर मैं चीन जाकर, सबको दाल चावल बनाना सिखाऊंगा।
..... कुछ भी खाते हैं।

2 **एक बात मुझे समझ नहीं आई**
जो गरीब के हक के लिए लड़ते हैं.
वह लड़ते-लड़ते अमीर कैसे हो जाते हैं!
शरीर कहता है कसरत कर ले,
' और' आत्मा को रबड़ी, जलेबी, समोसे, कचौड़ी और छोले भटूरे और गोल-गप्पे चाहिए।
पर शरीर तो नश्वर है, और आत्मा अजर अमर।
तो आत्मा की ही सुननी चाहिये।

3. ये रेस्टोरेंट में खाने के बाद जो कनस्तर भर के सौंफ और मिश्री का बुक्का मारते हो ना !!
शास्त्रों में इसे ही ह्टुच्चापनह्व कहा है ।।
ये जो ताला लगाने के बाद उसे पकड़ कर खींचते हो ना!!
इसे ही शास्त्रों में 'भय' कहा गया है ।।
ये जो तुम बिना जांजे।pp पर मैसेज भेजने के बाद
बार बार दो नीली धारियाँ चेक करते हो ना !
इसे ही शास्त्रों में 'उतावलापन' कहा है।
वो जो तुम गोलगप्पे वाले से कभी मिर्च वाला कभी सूखा, कभी दही वाला, कभी मीठी चटनी वाला माँगते वक्त उसे 'भैया' बोलते हो ना..
बस इसी को शास्त्रें में 'शोषण' कहा है
ये जो तुम.. भंडारे में बैठकर..
खाते हुए.. रायते वाले को आता देखकर..
जल्दी से.. रायता पी लेते हो!.
शास्त्रों में.. इसे भी छल कहा गया है !!
और इस पोस्ट को पढ़कर जो हँसी आती है उसे सुख कहा गया है
और आगे ऱफॉरवर्ड करने से जो आनन्द मिलता है उसे मोक्ष कहा गया है

#राममंदिर के लिये #जेल जाने वाले आज #श्रीराम का मंदिर देख रहे हैं!
#जेल #भेजने वाला #जेल में #चक्की #पीस रहे है!🤣🤣
#कारसेवक पर #गोली चलवाने वाले #अस्पताल में गोली💊 खा रहे है!😂😂
धन्य है प्रभु🙏
आपकी #लीला #अपरम्पार है!
जयश्रीराम

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश – 176061

परिकल्पना

हिमालयी जैवसंपदा के सतत उपयोग द्वारा जैवआर्थिकी को बढ़ावा देने हेतु प्रौद्योगिकियों पर

उद्देश्य

सर्वोत्कृष्ट विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी द्वारा हिमालयी जैवसंपदा से प्रक्रमों और उत्पादों की खोज, विकास

सीएसआईआर-अरोमा मिशन- जंगली गेंदा, दमस्क गुलाब, मुश्कबाला, लेमनग्रास की खेती तथा गैरउत्पादक/ अनुपयोगी भूमि में अन्य संभावित फसलों की खेती के लिए किसानों को सहयोग

सीएसआईआर- फाइटोफार्मास्यूटिकल मिशन- दुर्लभ एवं लुप्तप्राय औषधीय पौधों की प्रजातियों का संरक्षण और पुनर्वास तथा किसानों की आय बढ़ाने के लिए इन प्रजातियों की खेती को बढ़ावा देना

सीएसआईआर- न्यूट्रास्यूटिकल मिशन- स्वास्थ्य हेतु स्वदेशी स्रोतों पर आधारित न्यूट्रस्यूटिकल्स का विकास एवं समग्र पोषण संकेन्द्रण

पादप किस्में, पुष्पखेती और कृषिप्रौद्योगिकी- गुलाब, कैला लिलि, जरबेरा, लिलियम, बर्ड ऑफ पेराडाइज, एल्स्ट्रोमेरिया, स्टीविया, दमस्क गुलाब, जंगली गेंदा, चाय, कपूरकचरी, मुस्कबाला और जंगली हल्दी

प्रौद्योगिकियां- प्राकृतिक शून्य केलोरी स्वीटनर, केटेकिन, टी वाइन, हर्बल चाय, क्रिस्पी फ्रूट, प्रिज़रवेटिव रहित रेडी टु ईट खाद्य प्रौद्योगिकियां, कुपोषण निवारण हेतु आयरन व केल्शियम युक्त मेंगोबार व न्यूत्रीबार, थर्मोस्टेबल एन्जाइम – सॉड, आरएनए आइसोलेशन सोल्युशन तथा एसिन

कौशल विकास- प्रयोगशाला पशु विज्ञान में डिप्लोमा, प्रयोगशाला परीक्षण और विश्लेषणात्मक व्यावहारिक ज्ञान में डिप्लोमा, बागवानी और पुष्पोत्पादन, संरक्षित खेती में कौशल विकास तथा महिला एंव युवा सशक्तिकरण

इन्क्यूबेशन सुविधाएं- खाद्य प्रौद्योगिकी, हर्बल प्रसंस्करण, मूल्यवर्धित चाय उत्पाद और पादप उतक संवर्धन

सेवाएं- विश्लेषणात्मक सेवाएं (गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण, सामग्री/ उत्पादों का रसायनिक रूपरेखा (प्रोफाइलिंग) और मानकीकरण), पैकबायो लाइब्रेरी बनाना एवं सिक्वेंसिंग; मृदा, पादप और नैनो सामग्री विश्लेषण; विनियामक सेवाएं (विषाक्तता अध्ययन, जेबराफिश, चूहों व मूश्कों में मुखीय एवं त्वचीय विषाक्तता), हेमटोलॉजिकल एवं हिस्टोपैथोलॉजिकल विश्लेषण, विभिन्न मानवीय कैंसर कोशिकाओं पर साइटो-टॉक्सीसिटी अध्ययन

अन्य - सुदूर संवेदी (रिमोट सेन्सिंग) तथा भौगोलिक सूचना प्रणाली

संपर्क

निदेशक

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान,

पालमपुर (हिमाचल प्रदेश)- 176061

टेलीफोन- 01894- 230411, फैक्स 01894- 230433, ईमेल: director@ihbt.res.in, वेबसाइट- http://www.ihbt.res.in

हिमाचल सतर्क है

बदलकर अपना व्यवहार करें कोरोना पर वार

याद रखें

दो गज दूरी बेहद है ज़रूरी

क्या करें ✔

- ✔ अपने हाथों को अल्कोहल आधारित हैंड वॉश या साबुन और पानी से 20 सैंकेंड तक बार–बार धोएं।
- ✔ अगर आपको बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई है तो डॉक्टर से सम्पर्क करें।
- ✔ छींकते और खांसते समय, अपना मुंह व नाक टिशू पेपर / रूमाल या कपड़े से ढके।
- ✔ प्रयोग के तुरन्त बाद टिशू पेपर को किसी बंद डिब्बे में फेंक दें।
- ✔ भीड–भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें।
- ✔ अगर आप में कोरोना वायरस के लक्षण हैं तो कृपया हेल्पलाइन नम्बर 104 पर कॉल करें।
- ✔ Social Distancing बनाएं रखें।
- ✔ हॉम डिलीवरी सेवा का लाभ उठाएं।
- ✔ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आयुष मंत्रालय के दिशा–निर्देशों का पालन करें।
- ✔ **आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड कर प्रयोग करें।**
- ✔ सरकार के दिशा–निर्देशों का अनुपालन करें।

क्या न करें ✘

- × यदि आपको खांसी और बुखार अनुभव हो रहा हो तो किसी के सम्पर्क में न आएं।
- × अपनी आंख, नाक या मुंह को न छुएं।
- × मास्क पहने बिना घर से न निकलें।
- × सार्वजनिक स्थानों पर न थूकें।
- × अनावश्यक जमाखोरी न करें।
- × अफवाहें न फैलाएं।

आवश्यकता पड़ने पर नियंत्रण कक्ष व हेल्पलाइन में सम्पर्क करें –

प्रदेश हेल्पलाइन टोल फ्री नंबर 1070

सभी ज़िलों के लिए हेल्पलाइन टोल फ्री नंबर 1077

दिल्ली और चंडीगढ़ में भी सहायता कक्ष स्थापित:

दिल्ली के लिए 9868539423, 8802803672, 011–23711964

चंडीगढ़ के लिए 8146313167, 9988898009, 0172–5000104, 0172–2638278

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार

www.himachalpr.gov.in HimachalPradeshGovtIPRDept DPR Himachal dprhp